Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
Published from Ranchi

Sunday ● Sunday, 14 May 2023 ● Year : 01 ● Issue : 117 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com
E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

खुश रहना चाहिए इसलिए नहीं कि आपके पास खुश रहने का कारण है बल्कि इसलिए कि दुनिया को रत्ती भर फर्क नहीं पड़ता आपकी परेशानियों से।

धीरेंद्र शास्त्री के ड्राइवर बने बीजेपी के मनोज...

SHARE

सेंसेक्स	:	62,027.90
निफ्टी	:	18,314.80

SARAFA

सोना	:	5,800
चांदी	:	78.05

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

ममता बोलीं- राजभवन और राज्यपाल की जरूरत क्या है?

KOLKATA : पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने राज्यपाल और राजभवन की जरूरत को लेकर सवाल खड़ा किया है। शनिवार को उन्होंने कहा कि राज्यपाल और राजभवन की जरूरत क्या है? शुरूआत में राज्य और राज्यपाल के बीच मधुर संबंध थे लेकिन धीरे-धीरे उनमें खटास आ रही है। संयोग से, वामपंथी लंबे समय से राजभवन और राज्यपाल के पद को हटाने की मांग कर रहे हैं। बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान शनिवार को ममता के कालीघाट स्थित आवास पर पहुंचे। उनके जाने के बाद मुख्यमंत्री पत्रकारों से मुखातिब हुईं। कर्नाटक में भाजपा की हार पर टिप्पणी करने के बाद उन्होंने राज्यपाल पद और राजभवन की जरूरत पर सवाल उठाया। उन्होंने राज्यपाल की "शासन व्यवस्था" पर भी सवाल उठाए। सीएम ने कहा, राज्यपाल कैसे शासन कर रहे हैं? राजभवन की क्या जरूरत है? मैं अपने राज्यपाल की बात नहीं कर रही हूं।" मुख्यमंत्री ने तर्क दिया, हर जगह बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है। वित्तीय बचत के लिहाज से मैं कह रही हूं।"

भाजपा कर्नाटक की जनता के कल्याण के लिए प्रयास करती रहेगी : अमित शाह

NEW DELHI : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शनिवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा कर्नाटक के लोगों के कल्याण और विकास के लिए प्रयास करती रहेगी। अमित शाह ने ट्वीट कर कहा, भाजपा को इतने वर्षों तक उनकी सेवा करने का अवसर देने के लिए मैं कर्नाटक के लोगों का तहे दिल से आभार व्यक्त करता हूं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा कर्नाटक के लोगों के कल्याण और विकास के लिए प्रयास करती रहेगी। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस ने 224 सदस्यीय कर्नाटक विधानसभा चुनाव में 113 सीटों के बहुमत के आंकड़े को पार कर लिया है। समाचार लिखे जाने तक कांग्रेस ने 128 सीटों पर जीत दर्ज कर ली थी और 8 सीटों पर आगे चल रही थी। भाजपा 60 सीटें जीत चुकी थी और 5 पर आगे चल रही थी। जनता दल (सेक्युलर) ने 19 सीटों पर जीत दर्ज की थी।

सचिन तेंदुलकर ने फर्जी विज्ञापन के खिलाफ मामला दर्ज करवाया

MUMBAI : देश के पूर्व क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने मुंबई क्राइम ब्रांच की साइबर सेल में फर्जी विज्ञापन के खिलाफ मामला दर्ज करवाया है। इस मामले की गहन छानबीन मुंबई पुलिस क्राइम ब्रांच की साइबर ब्रांच कर रही है। सचिन तेंदुलकर ने अपनी शिकायत में कहा है कि ऑनलाइन उपभोक्ताओं को गुमराह करने के लिए उनके नाम, आवाज और फोटो का इस्तेमाल फर्जी विज्ञापन के लिए किया जा रहा है। उनके निजी सहायक ने फेसबुक पर एक तेल कंपनी का विज्ञापन देखा, जिसमें उनके चित्र , आवाज का उपयोग किया गया था। इस विज्ञापन में सचिन तेंदुलकर को उनके उत्पाद का प्रचार करते हुए दिखाया गया है। इसी तरह के विज्ञापन इंस्टाग्राम पर भी पाए गए थे। सचिन तेंदुलकर ने कहा कि उन्होंने इस तरह के किसी भी विज्ञापन के लिए अनुमति नहीं दी थी।

बड़ा सवाल : रोशपा टावर की पार्किंग से अवैध वसूली का हिस्सा कौन खा रहा? नगर आयुक्त बोले, पूरे मामले की होगी जांच

निगम की पर्ची देकर हर माह पांच लाख से ज्यादा की वसूली का मामला, वसूलने वाले होंगे चिन्हित

रोशपा का सच

SUHAIB ANSARI, RANCHI : रांची के मेन रोड स्थित रोशपा टावर की पार्किंग से अवैध वसूली का हिस्सा आखिर कौन खा रहा! वसूली करने वाले संगठित गिरोह का कहना है कि इस कॉप्लेक्स के मालिक को हिस्सा जाता है। जबकि एक जनप्रतिनिधि का दावा है कि निगम के अधिकारी भी पैसे लेते हैं। ऐसे में सवाल उठना स्वभाविक है कि रोशपा टावर से अनवरत हो रही वसूली का हिस्सा कौन खा रहा? निगम के लिए यह नुकसान है, या निगम की छवि धुमिल हो रही? देखना है कि निगम इस अवैध वसूली को संरक्षण देती है या इस अवैध वसूली पर विराम लगाती है।

हालांकि इस मामले पर बातचीत करने पर नगर आयुक्त शशि रंजन ने पूरे मामले की जांच कराने की बात कही है। उन्होंने कहा है कि रोशपा टावर की पार्किंग एरिया से बिना टेंडर अवैध वसूली हो रही है तो गंभीर बात है। इसपर कड़ी कार्रवाई की जाएगी। गौरतलब है कि रोशपा टावर से हर माह पांच लाख से ज्यादा की अवैध वसूली की जा रही। इसके लिए निगम की पर्ची भी थमाई जा रही। नहीं देने पर वसूली करने वाले उलझते हैं और विवाद करते हैं।

रोशपा टावर की पार्किंग एरिया में खड़ी बाइक ● फोटोन न्यूज

> बिना टेंडर या निगम की अनुमति के बगैर पार्किंग शुल्क वसूली किया जाना गलत है। अवैध वसूली की जांच की जाएगी। इसमें शामिल लोगों को चिन्हित कर कार्रवाई की जाएगी।
> **शशि रंजन, नगर आयुक्त, रांची नगर निगम रांची।**

लिखित शिकायत कर की गई है कार्रवाई की मांग

रोशपा टावर की पार्किंग से अवैध वसूली को लेकर नगर आयुक्त, उपायुक्त और एसएसपी रांची से शिकायत कर कार्रवाई की मांग की गई है। जिसमें कहा गया है कि रोशपा टावर की पार्किंग एरिया में खड़ी दो पहिया वाहनों से नगर निगम की पर्ची देकर दस-दस रुपए की वसूली की जा रही है। जबकि पार्किंग एरिया की निगम की ओर से कोई भी टेंडर जारी नहीं की गई है। जो रोशपा की अपनी पार्किंग एरिया है। रोशपा टावर के बाहरी छोर, यानी सड़क के ठीक किनारे वाली एरिया में केवल निगम की टेंडर है, जिसके आड़ में अवैध वसूली हो रही। जो एक संगठित गिरोह के द्वारा नगर निगम की पर्ची देकर अवैध ढंग से वसूली किया जा रहा। संबंधित गिरोह के लोग गुंडई करते हैं, उनसे उलझते और मारपीट भी करते हैं। वे हमेशा नशे में धुत रहते हैं। इससे निगम की छवि भी धुमिल हो रही।

क्या कहता है नियम

झारखंड बिल्डिंग बायलॉज की धारा 41.1 के अनुसार किसी भी अपार्टमेंट, भवन, ग्रुप हाउसिंग, होटल, रेस्तरां और लॉज, व्यावसायिक भवनों, वाणिज्यिक भवनों, अस्पतालों जैसे संस्थागत भवनों, स्कूलों और कॉलेजों जैसे शैक्षिक भवनों, बहु-मंजिला भवनों/परिसरों आदि सहित सभी भवनों में और अन्य सभी गैर-आवासीय भवनों में आवश्यकताओं के अनुसार पार्किंग स्थान बनाए जाएंगे।

क्या है स्थिति

रोशपा टावर में 700 से ज्यादा दुकानें और ऑफिस हैं। दुकानों के स्टाफ काम करने पहुंचते हैं। ग्राहकों का भी आना-जाना है। लेकिन इसके अनुरुप इस कॉप्लेक्स में पार्किंग की व्यवस्था नहीं है। जो पार्किंग एरिया हैं, वहां दो पहिया वाहनों खड़ी करने पर अवैध वसूली की जाती है। वैसे लोग जो अवैध वसूली का हिस्सा नहीं दे पाते वे रोशपा के पीछे बाइक खड़ी करते हैं। जहां से बाइक चोरी हो जाती। जो कभी नहीं मिलती।

कल रोशपा के बेसमेंट की मार्किंग करेगी निगम

रोस्पा टावर में दोबारा मार्किंग करने के लिए रांची नगर की टीम सोमवार को फिर से जाएगी। इस दौरान टीम देखेगी की मार्किंग के अनुसार बेसमेंट से अवैध कब्जा हटाया गया है या नहीं। कब्जा नहीं हटने पर निगम की टीम कब्जा तोड़ना शुरू करेगी। मालूम हो की निगम ने 72 घंटे के अंदर बेसमेंट से कब्जा हटाने के लिए दुकानदारों को नोटिस दिया था। लेकिन दुकानदारों ने स्वयं कब्जा हटाने के लिए एक सप्ताह का समय मांगा था। मालूम हो की निगम ने नोटिस में बिल्डर से कहा था कि वह कोर्ट के आदेश के आलोक में स्वेच्छा से अतिक्रमण हटा लें, अन्यथा निगम बलपूर्वक इसे तोड़ने की कार्रवाई करेगा। तोड़ने के कार्य में हुए खर्च की वसूली भी निगम बिल्डर से ही करेगा। रोस्पा टावर में नक्शा विचलन मामले को लेकर वर्ष 2016 में तत्कालीन नगर आयुक्त प्रशांत कुमार के कोर्ट ने आदेश पारित किया था।

कर्नाटक के चुनावी दंगल में CONGRESS को पूर्ण बहुमत, BJP का सूपड़ा हुआ साफ

पूरी ताकत झोंकने के बाद भी हारी भाजपा, राहुल गांधी बोले- यह मोहब्बत की जीत

AGENCY BENGALURU : कर्नाटक विधानसभा चुनाव 2023 के नतीजे आ गए हैं। कांग्रेस सूबे में पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाने जा रही है। बीजेपी दूसरे जबकि जेडीएस तीसरे नंबर की पार्टी बनी है। चुनाव नतीजों से उत्साहित कांग्रेस कार्यकताओं में जश्न का माहौल है। जीत के बाद दिल्ली स्थित कांग्रेस मुख्यालय पहुंचे राहुल गांधी ने कर्नाटक में पार्टी की जीत को नफरत पर मोहब्बत की जीत करार दिया। चुनाव आयोग की तरफ से जारी आंकड़ों के मुताबिक 136 सीटों पर जीत हासिल कर कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बन गई है, वहीं बीजेपी 65 सीटों पर जीत दर्ज कर दूसरे नंबर पर रही। जनता दल सेक्युलर 19 सीटें जीतकर तीसरे नंबर पर रही। वहीं 2 सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की और 2 पर अन्य दलों के उम्मीदवार विजयी रहे। बीजेपी इस बार कर्नाटक में दोबारा सत्ता में वापसी की राह देख रही थी तो कांग्रेस एंटी-इनकंबेंसी के सहारे सरकार बनाने की उम्मीद पाले बैठी थी। जबकि जेडीएस खुद को किंग मेकर बता रही थी और किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिलने पर अपनी बड़ी भूमिका का दावा कर रही थी।

कर्नाटक में विधानसभा चुनाव के नतीजों में पार्टी को बहुमत मिलने के बाद जश्न मनाते राहुल गांधी ● फोटोन न्यूज

कर्नाटक का अगला CM कौन?

कर्नाटक विधानसभा चुनाव 2023 में कांग्रेस ने धमाकेदार जीत दर्ज की है और बीजेपी को सत्ता से बाहर कर दिया है। कांग्रेस 136 सीटों के साथ कर्नाटक में वापसी की है, तो बीजेपी के खाते में केवल 65 सीटें आयीं। कर्नाटक में कांग्रेस की वापसी के साथ अब मुख्यमंत्री पद को लेकर चर्चा तेज हो गयी है। इस पद के लिए कांग्रेस से दो नाम सामने आ रहे हैं। एक पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धारमैया, तो दूसरा नाम कर्नाटक कांग्रेस अध्यक्ष डीके शिवकुमार। दोनों कांग्रेस के दिग्गज नेता हैं। सिद्धारमैया 2013 से 2018 तक राज्य के मुख्यमंत्री रहे हैं, जबकि शिवकुमार की अगुआई में कांग्रेस ने शानदार जीत दर्ज की है। अब देखना है कि कांग्रेस किसको अपना चेहरा मनाती है। सिद्धरमैया को कर्नाटक में मुख्यमंत्री पद का सबसे प्रबल दावेदार माना जा रहा है। हालांकि इससे पहले उन्होंने कहा था, यह मेरा अंतिम चुनाव है। मैं चुनावी राजनीति से संन्यास ले लूंगा। हालांकि अब उन्होंने संकेत दिया कि उनकी निगाहें भविष्य की संभावनाओं पर टिक गई हैं। मुख्यमंत्री पद पर काबिज होने की इच्छा जता चुके सिद्धरमैया अब आगे होने वाले घटनाक्रम का इंतजार कर रहे हैं। सिद्धरमैया 2013 से 2018 तक मुख्यमंत्री के रूप में राज्य की बागडोर संभाल चुके हैं। करीब ढाई दशक से जनता परिवार से जुड़े रहे और कांग्रेस विरोधी रुख के लिए पहचाने जाने वाले सिद्धरमैया 2006 में कांग्रेस में शामिल हुए थे। वर्ष 2004 में खंडित जनादेश के बाद कांग्रेस और जनता दल (सेक्युलर) ने कर्नाटक में गठबंधन सरकार बनाई थी, जिसमें कांग्रेस नेता एन। धर्म सिंह मुख्यमंत्री जबकि तत्कालीन जद (एस) नेता सिद्धरमैया को उपमुख्यमंत्री बनाया गया था। सिद्धरमैया कुरुबा समुदाय से ताल्लुक रखते हैं और यह समुदाय राज्य में तीसरी सबसे बड़ी आबादी है। सिद्धरमैया 1983 में लोकदल के टिकट पर चामुंडेश्वरी विधानसभा सीट से जीत हासिल कर पहली बार विधानसभा पहुंचे।

> मैं कर्नाटक की जनता, कर्नाटक में कांग्रेस पार्टी के कार्यकताओं और पार्टी के सब नेताओं को बधाई देता हूं। कर्नाटक के चुनाव में एक तरफ क्रोनी कैपिटलिस्ट की ताकत थी, दूसरी तरफ जनता की ताकत थी और जनता ने इन्हें हरा दिया। हमने प्यार और मोहब्बत से यह लड़ाई लड़ी। कर्नाटक की जनता ने हमें बताया, इस देश को मोहब्बत अच्छी लगती है। कर्नाटक में नफरत का बाजार बंद हुआ और मोहब्बत की दुकान खुली है। यह कर्नाटक की जीत है। हमारे पांच वादे हैं, हम इसे पहली कैबिनेट में पूरा करेंगे।
> **राहुल गांधी, अध्यक्ष भारतीय युवा कांग्रस**

> कर्नाटक विधानसभा चुनाव में जीत के लिए कांग्रेस पार्टी को बधाई। लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए मेरी शुभकामनाएं। मैं उन सभी को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने कर्नाटक चुनाव में हमारा समर्थन किया है। मैं भाजपा कार्यकताओं की कड़ी मेहनत की सराहना करता हूं। हम आने वाले समय में और भी अधिक जोश के साथ कर्नाटक की सेवा करेंगे।
> **नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री।**

> यह वास्तव में कर्नाटक के लोगों की जीत है। उन्होंने अपने प्रगतिशील भविष्य, अपने कल्याण और सामाजिक न्याय के लिए मतदान किया है। हाथ जोड़कर, हम पर विश्वास करने के लिए हम उनका धन्यवाद करते हैं। कांग्रेस पार्टी 5 गारंटियों को लागू करेगी। जय कर्नाटक! जय हिन्द!
> **मल्लिकार्जुन खड़गे, अध्यक्ष राष्ट्रीय कांग्रेस।**

> 'फूट डालो-राज करो' राजनीति की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। कर्नाटक विधानसभा चुनाव जीतने पर कर्नाटक की जनता और कांग्रेस पार्टी को हार्दिक बधाई एवं जोहार।
> **हेमंत सोरेन**
> **मुख्यमंत्री**
> **झारखंड।**

72 एकड़ में बना है झारखंड हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट से साढ़े तीन गुणा बड़ा है कैंपस

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 24 मई को देश के सबसे बड़े झारखंड HC भवन का करेंगी उद्घाटन

PHOTON NEWS RANCHI : देश का सबसे बड़ा हाई कोर्ट भवन राजधानी रांची में बनकर तैयार हो गया है। यह कैंपस सुप्रीम कोर्ट के कैंपस से साढ़े तीन गुणा बड़ा है। न्यू ग्रीन कैंपस में विभिन्न प्रजातियों के लगभग 2000 पौधे लगाये गये हैं। आधिकारिक रूप से भवन निर्माण विभाग ने झारखंड की न्यू हाई कोर्ट बिल्डिंग को पूरा कर लिया है। धुर्वा के तिरिल मौजा में 72 एकड़ में बने हाई कोर्ट के नए भवन का उद्घाटन 24 मई को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू कर सकती हैं।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

इसके अलावा भारत के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ एवं केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजिजू के भी आने की संभावना है। सूत्रों के अनुसार इन्हें आमंत्रित किया गया है। हाई कोर्ट के नए भवन के उद्घाटन समारोह की तैयारी को लेकर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्र के बीच वर्चुअल बैठक भी हो चुकी है, जिसमे तैयारियों पर चर्चा हुई है।

राज्य सरकार ने हाई कोर्ट की न्यू बिल्डिंग के लिए वर्ष 2012 में 165 एकड़ जमीन हस्तांतरित की थी। इसमें से 72 एकड़ जमीन पर हाईकोर्ट बिल्डिंग सहित वकीलों के लिए आधारभूत संरचना तैयार की गयी है। शेष जमीन पर न्यायाधीशों व रजिस्ट्री के कर्मियों के लिए आवास का निर्माण होना है। इसमें ऑडिटोरियम समेत खेल के मैदान के अलावा अन्य सुविधाएं उपलब्ध करायी जायेंगी।

कैंपस में वकील और मुवक्किलों के 2000 वाहनों की पार्किंग की व्यवस्था की गयी है। वहीं न्यायाधीशों के वाहनों के लिए मेंब्रेन रूफ केनोपी वाले पार्किंग की अलग व्यवस्था की गयी है। हाई कोर्ट की नयी बिल्डिंग में चीफ जस्टिस का कोर्ट रूम सबसे अंतिम हिस्से में बनाया गया । इस कोर्ट रूम का क्षेत्रफल अन्य कोर्ट रूम से सबसे अधिक है। यह कोर्ट रूम 80 फीट लंबा, 65 फीट चौड़ा व 40 फीट ऊंचा है।

मुख्य बिल्डिंग में 25 भव्य और आकर्षक वातानुकूलित कोर्ट रूम बन कर तैयार हो गये हैं। 24 न्यायाधीशों के लिए तथा एक मुख्य न्यायाधीश के लिए कोर्ट रूम बनाया गया है। प्रथम तल पर दाये-बायें छह-छह कुल 12 कोर्ट रूम बनाये गये हैं।

गर्मी से झुलस रहा झारखंड तापमान 40 डिग्री के पार

देवघर और पलामू सबसे गर्म, रांची का तापमान 37 डिग्री

PHOTON NEWS REPORTER : झारखंड प्रचंड गर्मी से झुलस रहा है। पिछले कुछ दिनों से गर्मी इतनी अधिक बढ़ गई है कि लोगों का बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। आसमान लगातार आग उगलने और सड़कों के गर्म ताप से लोगों का जीना मुहाल हो गया है। रांची मौसम विज्ञान विभाग के वैज्ञानिक अभिषेक आनंद ने बताया कि शनिवार को सबसे अधिक गर्म जिला देवघर रहा। यहां तापमान 40.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। वहीं, पलामू का तापमान 40.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। गढ़वा और गिरीडीह का तापमान 39 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। इस दौरान राजधानी रांची का तापमान 37 डिग्री सेल्सियस रहा। बढ़ती गर्मी को देखते हुए विभाग ने पहले ही अलर्ट जारी कर दिया है जिसमें गर्मी से बचने के घरेलू उपाय के साथ ही, सुबह दस बजे से दोपहर तीन बजे तक घर से बाहर नहीं निकलने की सलाह दी गयी है। उन्होंने गर्मी बढ़ने पर लोगों को सतर्क रहने की जरूरत है। विभाग की ओर से जारी मौसम पूवार्नुमान में बताया गया है कि चार दिनों तक तापमान में वृद्धि नहीं दर्ज की जायेगी लेकिन चार डिग्री सेल्सियस तक तापमान बढ़ने की संभावना है। हालांकि 16 मई से राज्य के कुछ हिस्सों में बारिश की संभावना व्यक्त की गयी है, जहां 16 से 18 मई तक राज्य के कुछ हिस्सों में बारिश होने की संभावना है।

जनसुनवाई का उद्देश्य समस्याओं का ऑन द स्पॉट समाधान : रामेश्वर उरांव

PHOTON NEWS LOHARDAGA

कुडू प्रखंड परिसर के सभागार में शनिवार को स्थानीय विधायक सह मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव की निगरानी में जनसुनवाई हुई। जनसुनवाई में पहुंचे ग्रामीणों ने लिखित रूप से अपनी समस्याओं को मंत्री के समक्ष रखा तथा समाधान की मांग की।

मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक सह मंत्री डॉ रामेश्वर उरांव ने कहा कि जनसुनवाई का उद्देश्य आमजनों है सीधा संवाद तथा जनता की समस्याओं का आन द स्पॉट समाधान करना है। कांग्रेस पार्टी ने तय किया है कि पार्टी के मंत्री तथा विधायक प्रखंड से लेकर पंचायत स्तर तक जनसुनवाई करेंगे। विशिष्ट अतिथि राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने कहा कि आमजनों की समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान होगा। सरकार

राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू व रामेश्वर उरांव सभा को संबोधित करते • फोटोन न्यूज

की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना हमारा लक्ष्य है। जनसुनवाई कार्यक्रम में पीसीसी सड़क निर्माण, सिंचाई के लिए बिजली आपूर्ति की व्यवस्था करने, भूमि विवाद से संबंधित मामले, नया ट्रांसफार्मर लगाने, पेयजल की व्यवस्था करने, प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाने, पेंशन से संबंधित मामले, बैंक से संबंधित मामले, धान खरीदी के बाद किसानों को द्वितीय किस्त का भुगतान नहीं होने तथा पेयजल को लेकर चापानल लगाने से संबंधित मामले आए। लगभग सभी मामलों का समाधान आन द स्पॉट कराया गया।

बाल विकास परियोजना कार्यालय ने एक दर्जन ट्राइसाइकिल, मनरेगा के तहत बिरसा मुंडा हरित क्रांति योजना के लाभुकों के बीच प्रमाण पत्र और प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभुकों को बीच प्रमाण पत्र का वितरण किया।

मांगों के समर्थन में राज्यपाल से मिलेगा ABRSM का प्रतिनिधिमंडल

PHOTON NEWS RANCHI

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ (एबीआरएसएम) के प्रदेश अध्यक्ष डॉ प्रदीप कुमार सिंह ने शनिवार को ऑनलाइन बैठक की। विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के प्राध्यापकों ने ग्रीष्मकालीन छुट्टी में कटौती पर आपत्ति जतायी। साथ ही पुरजोर विरोध किया।

सभी ने एकमत से कहा कि उच्च शिक्षा के प्राध्यापक को पठन-पाठन के लिए तैयारी के साथ ही रिसर्च भी करना पड़ता है। कई विश्वविद्यालयों में गर्मी की छुट्टियों में परीक्षा कार्य एवं मूल्यांकन कार्य के लिए प्राध्यापकों को कार्य करने के लिए विवश किया जाता है, यह बिल्कुल गलत है। एक तरफ केंद्रीय विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक सप्ताह में पांच दिनों का कार्य करते हैं जबकि राज्य के विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों को सप्ताह में छह दिनों तक कार्य करना पड़ता है। इन विसंगतियों को दूर कर एकरूपता लाने की आवश्यकता है। बैठक में सर्वसम्मति से उच्च शिक्षा के विभिन्न विश्वविद्यालयों में ग्रीष्मावकाश को कम करने का पुरजोर विरोध करते हुए एबीआरएसएम का उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल राज्यपाल से मिलकर इसके निराकरण की मांग करेगा। साथ ही प्रोन्नति की विसंगतियों को समाप्त करने, पीएचडी इन्क्रीमेंट का लाभ देने की मांग करेगा।

बैठक में डॉ प्रीतम कुमार, डॉ ब्रजेश कुमार, डॉ सुनीता कुमारी गुप्ता, डॉ राजकुमार चौबे, डॉ अजय कुमार सिन्हा, डॉ अंजनी शर्मा सहित कुल 32 प्राध्यापक मौजूद थे।

क्रिकेट की संभावनाओं को तलाशने के लिए होगा नमो क्रिकेट कैंप : संजय सेठ

PHOTON NEWS RANCHI

रांची के सांसद संजय सेठ ने कहा कि नमो क्रिकेट कैंप का आयोजन क्रिकेट की संभावनाओं को तलाशने के लिए होगा। सांसद शनिवार को अरगोड़ा स्थित कार्यालय में प्रेस कांफ्रेंस में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि रांची में क्रिकेट की अपार संभावनाएं हैं। इसे तराश कर और बेहतर किया जा सकता है। रांची ने क्रिकेट जगत को महेंद्र सिंह धोनी जैसे सितारे दिए। भविष्य में कई महेंद्र सिंह धोनी रांची में है, उनका मनोबल बढ़ाने की आवश्यकता है। थोड़े बेहतर प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से एक जून से 10 जून 2023 तक शारदा ग्लोबल स्कूल बुकरू (कांके) में 10 दिवसीय नमो क्रिकेट कैप का आयोजन किया

नमो क्रिकेट कैंप की जानकारी देते सांसद संजय सेठ • फोटोन न्यूज

गया है। सांसद ने कहा कि इस क्रिकेट कैंप का संचालन बिहार झारखंड के भूतपूर्व रणजी खिलाड़ी प्रदीप खन्ना के मार्गदर्शन में संपन्न होगा। यहां बच्चों को क्रिकेट के बेहतर गुर सिखाया जाएंगे। इस क्रिकेट कैप में नवोदित अंडर 17 क्रिकेटरों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रशिक्षण शिविर के लिए फॉर्म विद्यालय के माध्यम से ही स्वीकार किया जायेगा। प्रशिक्षण में भाग लेने वाले खिलाडियों की उम्र सीमा 15 से 17 वर्ष निर्धारित की गई है।

प्रशिक्षण में भाग लेने वाले बच्चों के लिए फॉर्म भरने की अंतिम तिथि 25 मई रखी गई है। इस प्रशिक्षण शिविर में जितने भी बच्चे भाग लेंगे उनका एक ट्रायल लिया जाएगा। ट्रायल के आधार पर 50 बच्चों को प्रशिक्षण के लिए सेलेक्ट किया जाएगा। ट्रायल 28 मई दिन रविवार को शारदा ग्लोबल स्कूल में संपन्न होगा। यह प्रशिक्षण सुबह 7:00 बजे से 12:00 बजे तक आयोजित की जाएगी।

वायरल वीडियो प्रकरण में सुप्रियो ने भाजपा नेताओं से मांगा जवाब

PHOTON NEWS RANCHI

झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के वरिष्ठ नेता सुप्रियो भट्टाचार्य ने झारखंड प्रदेश के भाजपा नेताओं पर निशाना साधा है। भट्टाचार्य ने शनिवार को प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि कुछ दिनों पहले कमर दर्द से राहत के लिए नामकुम के एक वैद्य से उन्होंने मदद ली थी। इलाज के दौरान वैद्य ने प्रमोशन के लिए वीडियो बनाया था लेकिन इसे भाजपा वालों ने अभद्र तरीके से एडिट कर सोशल मीडिया में वायरल कर दिया।

उन्होंने इस मामले में जब लालपुर थाने में केस दर्ज कराया तो इसे डिलीट कर दिया गया। इस

प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते सुप्रियो भट्टाचार्य • फोटोन न्यूज

प्रकरण से भाजपा नेताओं के नफरत फैलाने को कैरेक्टर जाहिर होता है। भाजपा नेता बाबूलाल मरांडी, रघुवर दास और दीपक प्रकाश इस मामले पर जवाब दें। पुलिस जांच में इस पूरे मामले की सत्यता सामने आ ही जायेगी। भट्टाचार्य ने कर्नाटक चुनाव परिणाम के लिए कांग्रेस को बधाई दी है।

रांची नगर निगम के पदाधिकारी शहरी आवास योजना का लाभ उठा रहे, शहरवासी परेशान

PHOTON NEWS RANCHI

रांची नगर निगम भ्रष्टाचार का मुख्य केंद्र बिंदु बना है। 2800 करोड़ के बजट बावजूद सेवा के मामले में कोताही बरत रहा है। शहर के 53 वार्ड में सफाई व्यवस्था, पेयजल आवास योजना में भारी धांधली किया जा रहा है । निगम में कार्यरत कर्मचारी पदाधिकारी स्वयं सक्षम होते हुए आवास योजना का लाभ ले रहे हैं। कुछ आवास में बाउंड्री वाल प्लेग्राउंड नहीं रहने के कारण असुरक्षा महसूस करते हैं। नेशनल पीपुल्स पार्टी के कार्यसमिति बैठक में विभिन्न वार्डों के जन समस्या के विषय में चर्चा किया गया।

मौके पर प्रदेश महासचिव अमर महतो ने कहा कि नगर निगम में धांधली जोर शोर से है।

नेशनल पीपुल्स पार्टी के अमर महतो व अन्य • फोटोन न्यूज

जल्द ही इसकी सूचना नगर सचिव विनय कुमार चौबे से मिलकर अवगत कराएंगे। प्रदेश कार्यसमिति सदस्य आरती देवी ने कहा आवास योजना में भारी अनियमितता बरती गया है। जिस कारण से लाभ प्राप्त करने वाले शहर वासियों को इससे दूर रखा गया। प्रदेश प्रवक्ता सुमन बाड़ा ने शहरवासियों को मिलने वाले जल टैंकरों की संख्या बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने कहा गर्मी को देखते हुए रांची नगर निगम के अधिकारियों को टैंकर की संख्या बढ़ानी चाहिए एवं निगम के जो भी जमीन है उसे सुरक्षित कर लेना चाहिए ताकि अतिक्रमण कारी से मुक्त किया जा सके।

प्रशांत सिंह बने आईपीएस एसोसिएशन के अध्यक्ष, अनूप बिरथरे बने सचिव

PHOTON NEWS RANCHI

आईपीएस प्रशांत सिंह को सर्वसम्मति से झारखंड राज्य आईपीएस एसोसिएशन का अध्यक्ष चुना गया है। प्रशांत सिंह वर्तमान में पुलिस हाउसिंग कॉपोरेशन लिमिटेड के चैयरमैन है। जबकि आईपीएस अनूप बिरथरे (डीआईजी-रांची) को एसोसिएशन का सचिव चुना गया है। इसको लेकर डोरंडा के खुखरी गेस्ट में एक आईपीएस एसोसिएसन की बैठक आयोजित की गयी थी। इसमें एसोसिएशन के अध्यक्ष और सचिव पद का चुनाव होना था। इसमें एसोसिएशन के अध्यक्ष पद के लिए आईपीएस सह एडीजी (वारलेस) राजकुमार मल्लिक ने प्रशांत सिंह का नाम अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित किया, जिस पर एसोसिएशन के सभी अधिकारियों ने सहमति जताई। उल्लेखनीय है कि प्रशांत सिंह झारखंड कैडर के 1992 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं। वे डीजी पद पर पदस्थापित हैं।

झारखंड जवाहर बाल मंच प्रदेश प्रतिनिधिमंडल राष्ट्रीय संवाद कार्यक्रम में शामिल हुए लोग

PHOTON NEWS RANCHI

हिमाचल प्रदेश में जवाहर बाल मंच के प्रतिनिधिमंडल का राष्ट्रीय सम्मेलन संवाद कार्यक्रम रखा गया। जिसमें 24 राज्यों के प्रतिनिधि शामिल हुए देश भक्ति एवं राष्ट्र निर्माण को लेकर कार्यक्रम के मुख्य पृष्ठभूमि रहे प्रतिनिधिमंडल ने मुख्य मंत्री सुखविंदर सिंह, पंचायती राज मंत्री अनिरुद्ध सिंह, पीएचडी मंत्री

विक्रमादित्य सिंह से मुलाकात कर झारखंड की गतिविधि की जानकारी दिया गया।

11 एवं 12 मई को संवाद कार्यक्रम रखा गया। जिसमें झारखंड कोऑर्डिनेटर मोहम्मद अबूजर ने कहा कार्यक्रम में ऊर्जा तमक एवं अनुशासन पूर्वक संपन्न कराया गया। राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र निर्माण, महापुरुषों के बलिदान के विषय में चर्चा किया गया ताकि देश के भविष्य के प्रति आने वाले युवा मजबूती के साथ समझ सके। मोहब्बत अबूजर चतरा और लोहरदगा जिला का प्रमुख भी बनाया गया है।

इनकी कार्यशैली सराहनीय है। शासन प्रशासन की गतिविधियों पर हमेशा अंकुश लगाने का प्रयास करते हैं ताकि जनता जनार्दन को किसी तरह का तकलीफ ना हो।

आरएमसी सिटीजन फोरम, टीम ग्रीन और अर्बन खेती ने सामुदायिक कंपोस्टिंग पर आयोजित की कार्यशाला

कम्युनिटी कंपोस्टिंग को बढ़ावा दें : दीपेश निराला

PHOTON NEWS RANCHI

रांची में बढ़ते प्रदूषण और उसके निवारण के लिए रांची नगर निगम सिटीजन फोरम, टीम ग्रीन और अर्बन खेती ने मिलकर वार्ड नंबर 03 अंतर्गत शहीद संकल्प पार्क, मोराबादी में एक सामुदायिक कम्पोस्टिंग कार्यशाला का आयोजन किया। जिसमें पार्क से निकलने वाले सूखे पत्तों और आसपास के मंदिर व घर से निकलने वाले पूजा वेस्ट को खाद में तब्दील करने की प्रक्रिया बताई। आज जिन सूखे पत्तों को जला देने से प्रदूषण की समस्या विकराल रूप ले रही है। उन्हीं पत्तों

रांची नगर निगम सिटीजन फोरम के बैनर को हाथ में लिए लोग • फोटोन न्यूज

से बनी खाद से इस धरती की ताकत को बढ़ा उसे उर्वर बनाया जा सकता है। रांची को फिर से हरा भरा बनाने में योगदान देने हेतु यह जागरूकता

कम्पोस्टिंग के बारे में बताते अधिकारी • फोटोन न्यूज

ड्राइव चलाया गया, ताकि लोगों को स्वच्छ और प्रदूषणमुक्त हवा मिल सके। उक्त कार्यशाला में रांची नगर निगम सिटीजन फोरम के संयोजक दीपेश निराला के साथ कोर कमेटी सदस्य रेणुका तिवारी, मिली वर्मा, संतोष अग्रवाल, विनोद जैन बेगवानी, प्रमोद कुमार जयसवाल, सुशील क्रांतिकारी, अनिल कुमार, अर्बन खेती से विनोद कुमार और प्रकाश कुमार, एवं टीम ग्रीन से हरेंद्र कुमार सहित अभय बख्शी, अरुण गोस्वामी, अजय जैन, सुशील कुमार वर्मा, सुरेश कुमार भगत, आशुतोष कुमार सुधांशु, मनोज कुमार काबरा, संजय चौधरी, पवन खेतान, इत्यादि उपस्थित हुए। धन्यवाद ज्ञापन सुशील क्रांतिकारी ने किया।

BRIEF NEWS

कर्नाटक में जीत के बाद प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में जश्न

RANCHI : कांग्रेस के झारखंड प्रदेश कार्यालय में कर्नाटक चुनाव में जीत के बाद जश्न का माहौल है। एक दूसरे को मिठाई खिलाकर कांग्रेस नेताओं और कार्यकताओं ने खुशी जाहिर की। साथ ही जमकर पटाखे फोड़े। ढोल-नगाड़ों की थाप पर नेता और कार्यकर्ता नाच रहे थे। इस दौरान पार्टी कार्यालय में कुछ कार्यकर्ता बजरंगबली का मुखौटा और गदा भी लिए हुए थे। प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने कहा कि भाजपा के बड़बोलेपन के कारण भाजपा का हाल आने वाले दिनों में और बुरा होने वाला है। यह कर्नाटक की जनता की जीत है। यह परिणाम आनेवाले चुनाव के लिए सुखद संदेश है। अन्य राज्यों में होने वाले चुनाव में कांग्रेस परचम लहरायेगी। पार्टी विधायक दल के नेता आलमगीर आलम ने कहा कि भाजपा के हर हथकंडों को हमलोगों ने तार-तार कर दिया है। भाजपा ने जाति-धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह करने की जो साजिश रची थी वह सब कुछ धरा रह गया। क्योंकि, जनता अब इनके छलावे में नहीं आने वाली। आने वाले दिनों में अन्य राज्यों के चुनाव में भी यही परिणाम देखने को मिलेगा। इस दौरान रमा खलखो, सुंदरी तिर्की, राजीव रंजन प्रसाद सहित कई नेता और कार्यकर्ता मौजूद थे।

अनोखा रिकॉर्ड : एक प्रत्याशी ने बनाया चुनाव का नया रिकॉर्ड, खुद का भी नहीं दिया वोट

JHANSI : निकाय चुनाव 2023 में यूं तो तमाम रिकॉर्ड बने हैं, लेकिन गरौठा तहसील में एक ऐसा रिकॉर्ड भी बना है जिसे न आपने पहले कभी सुना होगा और न ही देखा होगा। पार्षद पद के एक प्रत्याशी के खाते में एक भी मत पत्र नहीं निकला। यह खबर पूरे तहसील में जंगल की आग की तरह फैल गई। लोग सोच कर हैरान हैं कि आखिर प्रत्याशी ने अपना वोट क्यों नहीं डाला? गुरसरांय नगर पालिका परिषद के वार्ड नंबर-23 से पार्षद प्रत्याशी राकेश कुशवाहा ने जिला ही नहीं बल्कि प्रदेश में भी पहली बार एक नया चुनावी रिकॉर्ड बनाया है। वार्ड नंबर-23 से इनको कोई भी मत नहीं मिला है। यह पहली बार देखा गया है कि चुनाव में खड़े प्रत्याशी के खाते में शून्य वोट पड़े हैं। लोगों को आश्चर्य इस बात का है कि आखिर कैसे उन्हें खुद का भी वोट नहीं मिला। यह चुनाव परिणाम आने के बाद पूरे गरौठा तहसील और जहां-जहां खबर पहुंची लोग आश्चर्यचकित रह गए।

मेरठ को बनाएंगे स्मार्ट सिटी : हरिकांत अहलूवालिया

MEERUT : मेरठ में महापौर पर धमाकेदार जीत दर्ज करने वाले भाजपा के हरिकांत अहलूवालिया ने अपनी जीत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को दिया है। चुनाव जीतने के बाद उन्होंने मेरठ शहर को स्मार्ट सिटी बनाना अपनी प्राथमिकता बताया है। 2012 में भी भाजपा के हरिकांत अहलूवालिया महापौर चुने गए थे। इसके बाद 2017 में महापौर का पद अनुसूचित जाति महिला के लिए आरक्षित हो गया। उस चुनाव में बसपा की सुनीता वर्मा ने भाजपा उम्मीदवार कांता कर्दम को हरा दिया था। पांच साल बाद हरिकांत अहलूवालिया ने फिर से महापौर बनने में कामयाबी हासिल की। भाजपा उम्मीदवार ने एआईएमआइएम के अनस को एक लाख सात हजार से अधिक वोटों से पराजित किया। जबकि सपा उम्मीदवार सीमा प्रधान तीसरे स्थान पर खिसक गईं। महापौर पद पर धमाकेदार जीत दर्ज करने के बाद भाजपा कार्यकताओं ने हरिकांत अहलूवालिया को कंधों पर उठा लिया। चुनाव जीतने के बाद हरिकांत ने अपनी जीत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को दिया। अब मेरठ के विकास को सर्वोपरि मानते हुए कार्य करने की बात कही। हरिकांत ने कहा कि 2012 में प्रदेश में सपा सरकार होने के कारण वे मेरठ का अपेक्षित विकास नहीं करा पाए। अब ट्रिपल इंजन सरकार बनने से मेरठ को स्मार्ट सिटी में बदला जाएगा। उन्होंने कहा कि यह जनता के भरोसे और कार्यकताओं के परिश्रम से चुनाव जीते हैं। अब प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री की विकास परक योजनाओं का लाभ मेरठ की जनता को मिलेगा। सबसे पहले मेरठ के ड्रेनेज सिस्टम को दुरुस्त किया जाएगा, जिससे शहर में जलभराव ना हो। शहर में कूड़े का निस्तारण कराना उनकी प्राथमिकता में रहेगा। शहर में जाम और अतिक्रमण की समस्या को दूर किया जाएगा। शहर के विकास में बजट को बाधा नहीं बनने दिया जाएगा। बिना किसी भेदभाव के पूरे शहर का विकास कराया जाएगा। जनप्रतिनिधियों और व्यापारी संगठनों के साथ मिलकर एक समन्वय समिति का गठन करेंगे, जिससे शहर की समस्याओं का निदान किया जा सकें।

नड्डा बोले- नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पार्टी करती रहेगी लोगों के हित में काम

DELHI : कर्नाटक चुनाव में करारी हार के बाद भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने जनादेश को विनम्रता से स्वीकार किया है। इसको लेकर शनिवार देर शाम एक ट्वीट कर जेपी नड्डा ने कहा कि भाजपा कर्नाटक की जनता के जनादेश को विनम्रता से स्वीकार करती है। उन्होंने कहा कि मैं कर्नाटक भाजपा के मेहनती कार्यकताओं को उनके प्रयासों और हमारी दृष्टि में विश्वास दिखाने वाले लोगों को धन्यवाद देता हूं। नड्डा ने आगे लिखा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा लोगों की भलाई के लिए काम करती रहेगी। और राज्य में सक्रिय रूप से रचनात्मक विपक्ष की भूमिका निभाते हुए आम जन की आवाज बुलंद करेगी। उल्लेखनीय है कि कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस ने 136 सीटें जीती हैं, वहीं भाजपा को 65 सीटों पर जीत मिली। जनता दल सेक्यूलर के खाते में 19 सीटें आईं।

एक बेहतर समाज का निर्माण करती है बेहतर शिक्षा : ऊर्जा मंत्री तोमर

भोपाल, 13 मई (हि.स.)। ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने शनिवार को ग्वालियर के फोर्ट रोड स्थित कन्या शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के समर केम्प के समापन पर कहा कि शिक्षा हमें बेहतर इंसान बनाती है, जिसकी बदौलत हम समाज में बेहतर माहौल बनाने में अपनी भूमिका अदा करते हैं। साथ ही अपने शहर और माँ-बाप का नाम रोशन करते हैं। ऊर्जा मंत्री तोमर ने कहा कि आज ग्वालियर विधानसभा में दो सीएम राइज स्कूल हैं। उन्होंने चित्रकला प्रतियोगिता के विजेता छात्रा को 3100 रुपये और अन्य विजेता छात्राओं को 2100 रुपये पुरस्कार दिया। उन्होंने घोषणा की कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के हाईस्कूल और इंटरमीडियट में 90 प्रतिशत अंक लाने पर पुरस्कार राशि और प्रशंसा प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया जायेगा। मंत्री तोमर ने कहा कि ग्वालियर विधानसभा में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन आगामी माह में किया जायेगा।

उप्र नगर पालिका: 22 वर्ष बाद नगर पालिका परिषद जौनपुर में खिला 'कमल'

JAUNPUR : नगर निकाय के चुनाव के बाद से नगर पालिका परिषद जौनपुर की सीट को लेकर तमाम कयास लगाए जा रहे थे, इन कयासों के बीच शनिवार देर रात मतगणना सम्पन्न हुई तो अप्रत्याशित परिणाम सामने आए। सदर सीट पर लगभग दो दशक बाद कमल का फूल खिलने में एक बार फिर कामयाब रहा। इससे पूर्व भारतीय जनता पार्टी की चेयरमैन श्रीमती स्व. संध्या रानी श्रीवास्तव ने वर्ष 1995 में यहां कमल खिलाया था। उसके बाद बीते 22 सालों से यहां कमल नहीं खिला। इससे पूर्व लगभग 22 सालों से इस सीट पर बसपा पार्टी का लगातार कब्जा रहा। उनके इस किले को सेंध लगाते हुए भारतीय जनता पार्टी की उम्मीदवार मनोरमा मौर्य 10,791 मतों से अपनी ऐतिहासिक जीत दर्ज किया है। मुंगरा बादशाहपुर से भी भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार कपिल मुनि मिश्रा ने भारी मतों से जीत दर्ज किया। अपने जीत से अभिभूत भारतीय जनता पार्टी(भाजपा) की उम्मीदवार मनोरमा मौर्य ने अपने इस जीत का श्रेय अपने सभी कार्यकताओं को दिया। उन्होंने कहा कि अभी जो अधूरे काम है उसे पूरा करना है। साथ ही नगर पालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार को हटाना उनकी प्राथमिकता में होगा। उन्होंने कहा कि महिला होने के नाते जो भी प्राथमिकता से महिलाओं के काम होंगे, उसे निपटाया जाएगा।

BRIEF NEWS

रांची में धोखाधड़ी के मामले में नाइजीरियन नागरिक गिरफ्तार

RANCHI : बरियातू पुलिस ने धोखाधड़ी के मामले में नाइजीरिया के नागरिक को गिरफ्तार किया है। आरोपित का नाम मॉरिस बताया जा रहा है। मॉरिस की गिरफ्तारी की जानकारी नाइजीरिया के घाना स्थित दूतावास को दे दी गई है। मिली जानकारी के अनुसार मॉरिस के खिलाफ एक महिला ने रुपये की धोखाधड़ी की शिकायत बरियातू थाना में की थी। महिला से उसने कुछ पैसे ठगे थे और ज्यादा ठगने के लालच में वह पकड़ा गया। सिटी एसपी शुभांशु जैन ने बताया कि नाइजीरिया के एक नागरिक को गिरफ्तार किया गया है। फिलहाल, उससे पूछताछ की जा रही है।

न्यायाधीश एस चंद्रशेखर बने राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यकारी अध्यक्ष

RANCHI : झारखंड हाई कोर्ट के न्यायाधीश एस. चंद्रशेखर को राज्य विधिक सेवा प्राधिकार का कार्यकारी अध्यक्ष के पद पर योगदान की तिथि से अगले आदेश तक नियुक्त किया गया है। झारखंड राज्यपाल के आदेश के बाद कार्मिक प्रशासनिक सुधार राजभाषा विभाग ने इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी है। इस संबंध में झारखंड हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने अनुशंसा की थी।

सामुदायिक कम्पोस्टिंग कार्यशाला में लोगों की दी गई जानकारी

RANCHI : रांची में बढ़ते प्रदूषण और उसके निवारण के लिए रांची नगर निगम सिटीजन फोरम, टीम ग्रीन और अर्बन खेती ने मिलकर वार्ड नंबर 03 अंतर्गत शहीद संकल्प पार्क, मोरहाबादी में एक सामुदायिक कम्पोस्टिंग कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें पार्क से निकलने वाले सूखे पत्तों और आसपास के मंदिर व घर से निकलने वाले पूजा वेस्ट को खाद में तब्दील करने की प्रक्रिया बताई गई। कार्यशाला में रांची नगर निगम सिटीजन फोरम के संयोजक दीपेश निराला के साथ कोर कमेटी सदस्य रेणुका तिवारी, मिली वर्मा, संतोष अग्रवाल, विनोद जैन बेगवानी, प्रमोद कुमार जयसवाल, सुशील क्रांतिकारी, अनिल कुमार, अर्बन खेती से विनोद कुमार और प्रकाश कुमार, पवन खेतान इत्यादि मौजूद रहे।

15 मई से निगम का मेरी लाइफ मेरा स्वच्छ शहर कार्यक्रम

RANCHI : रांची नगर निगम 15 मई से केंद्र सरकार का कार्यक्रम मेरी लाइफ मेरा स्वच्छ शहर शुरू करेगा। इसके तहत ट्रिपल आर यानी रिड्यूस, रियूज और रिसाइकल को कैसे अपनाया जाए, यह बताया जाएगा। पहले रांची नगर निगम के अधिकारीगण एवं कर्मी खुद का सामान आआरआर की मूल भावना के तहत जमा करेंगे। इसके साथ आम नागरिकों से पुराने कपड़े, जूते, किताबें, खिलौने, प्लास्टिक की वस्तुओं और इलेक्ट्रॉनिक सामान जैसी गैर जरूरी इस्तेमाल की चीजों को लिया जाएगा, ताकि उन्हें रिसाइकल कर शहर को कचरा मुक्त बनाया जा सके। यह अभियान 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस तक सभी वार्डों में चलाया जाएगा।

रांची के 32 परीक्षा केंद्रों में बीएड प्रवेश परीक्षा संपन्न

RANCHI : झारखंड में शनिवार को बीएड की प्रवेश परीक्षा हुई। इसके लिए रांची जिला में 32 परीक्षा केंद्र बनाए गए थे। बीएड की प्रवेश परीक्षा के लिए रांची से 19385 विद्यार्थियों ने रजिस्ट्रेशन कराया था। परीक्षा सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक चली।

atomy
ATOMY
INDIA
RANCHI TEAM
WARRIOR CENTRE
4th Floor, Shop No. 22, 23, 24
Roshpa Roshpa Tower,
Main Road, Ranchi - 834001
Mob. 9334495776

निवेदिता हत्याकांड : FB LIVE आकर आरोपी ने खुद को मारी गोली, मौत

जिस पिस्टल से निवेदिता को मारी गोली उसी पिस्टल से खुद को भी गोली मारी

CRIME REPORTER RANCHI : अरगोड़ा थाना क्षेत्र के पटेल पार्क स्थित हरमू नंद नगर में निवेदिता नाम की छात्रा की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। हत्याकांड के मुख्य आरोपी अंकित कुमार ने अपने अंकित अहीर नाम के फेसबुक आइडी पर लाइव आकर खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर लिया। अंकित ने शनिवार को कोकर के अयोध्यापुरी स्थित एक घर में खुद को गोली मार ली। जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। अंकित ने जिस पिस्टल से निवेदिता उर्फ खुशी को गोली मारी थी, उसी पिस्टल से खुद को भी गोली मार ली। दूसरी ओर पुलिस उसकी गिरफ्तारी के लिए बिहार के नवादा समेत कई ठिकाने पर छापेमारी कर रही थी। अंकित और निवेदिता के बीच काफी समय से प्रेम-प्रसंग चल रहा था। दो माह से निवेदिता अंकित से बात नहीं कर रही थी। जिससे नाराज होकर अंकित ने इस घटना को अंजाम दिया था।

मृतक आरोपी अंकित कुमार की फेसबुक पर लाइव तस्वीर

पिता ने युवक से परहेज करने की दी थी सलाह, बात करने से किया था मना

निवेदिता के पिता सिद्धेश्वर प्रसाद ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से निवेदिता ने उसे बताया था कि अंकित नाम का एक युवक उसे परेशान कर रहा था, जिस पर उसके पिता ने उस युवक से परहेज करने की सलाह दी और बातचीत नहीं करने के लिए कहा था। उसके पिता ने बताया कि निवेदिता को समझाने के बाद उनकी बेटी उस लड़के को इग्नोर कर रही थी, जो उसे अच्छा नहीं लगा। इसलिए उस युवक ने उनकी बेटी की गोली मारकर हत्या कर दी। निवेदिता के पिता सिद्धेश्वर प्रसाद ने बताया कि जब उन्होंने अपनी बेटी को समझा दिया था और उनकी बेटी उस लड़के से परहेज करने लगी थी इसलिए उन्होंने पुलिस को सूचित नहीं किया था।

बात नहीं करने से नाराज था युवक

जानकारी के मुताबिक निवेदिता शुक्रवार को अपनी सहेली श्रृष्टि कुमारी के साथ हरमू बाजार में नाश्ता करने के लिए गई थी। शाम 6.15 बजे वह नाश्ता करने के बाद हॉस्टल लौट रही थी। हॉस्टल से 50 मीटर की दूर पर जब वह पहुंची, उसी दौरान अपराधी अंकित कुमार उसके पास पहुंचा। उसने निवेदिता से पूछा कि मुझसे बात क्यों नहीं कर रही हो, निवेदिता ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। इसी दौरान अंकित ने निवेदिता को तीन गोली मार दी। एक गोली निवेदिता की आंख में लगी, जबकि दो गोली छाती में लगी। वहीं गोली छिटकने से उसकी सहेली श्रृष्टि भी घायल होकर सड़क पर गिर गयी। गोली की आवाज सुनकर आसपास के लोग घरों से निकले, तबतक अंकित मौके से फरार हो गया था।

आजीवन कारावास की सजा काट रहे कैदी की रिम्स में मौत

CRIME REPORTER RANCHI : बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा में आजीवन कारावास की सजा काट रहे 50 वर्षीय बंदी विष्णु असुर रिम्स में इलाज के दौरान मौत हो गयी। लोहरदगा निवासी विष्णु असुर का 11 अप्रैल से कारा अस्पताल में इलाज चल रहा था। लेकिन अचानक तबीयत ज्यादा खराब होने के बाद उसे 5 मई को कारा चिकित्सक की अनुशंसा पर रिम्स में भर्ती किया गया था। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गयी। कारा अधीक्षक ने रिम्स अधीक्षक को पत्र लिखकर मृत सजावार बंदी के शव के पोस्टमार्टम की पूरी प्रक्रिया की वीडियोग्राफी कराने का आग्रह किया है।

इससे पहले भी कैदी की इलाज के दौरान हुई थी मौत

बता दें कि इससे पहले 26 मार्च को बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार में पोक्सो एक्ट के तहत जेल में बंद कैदी की रिम्स में इलाज के दौरान मौत हो गयी थी। अमित बारला का 3 महीने तक रिम्स इलाज हो रहा था। बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार में तबीयत खराब होने के बाद 27 दिसंबर 2022 को कारा चिकित्सकों की अनुशंसा पर इलाज के लिए उसे रिम्स लाया गया था। अमित खूंटी जिले के मुरहू थाना क्षेत्र के कोडाकेल गांव का रहने वाला था।

ट्रक ने स्कूटी में मारी टक्कर, एक की मौत

रांची के अरगोड़ा थाना क्षेत्र स्थित कार्तिक उरांव चौक के समीप सड़क दुर्घटना में स्कूटी सवार ईशान अजहर वाहिद (12) की मौत हो गयी। वह हिंदपीढ़ी का रहने वाला था। मिली जानकारी के अनुसार ईशान स्कूटी से कहीं जा रहा था। इसी दौरान टर्बो ट्रक ने स्कूटी में टक्कर मार दी। इससे घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई। घटना के बाद चालक फरार हो गया। पुलिस ने ट्रक और स्कूटी को जब्त कर लिया। शव को पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया गया।

कृषि तकनीकी पार्क में खड़ी फसलों का भ्रमण

जायद फसल का रकबा घटा दलहन-मोटे अनाज का बढ़ा

खड़ी फसलों का भ्रमण करते वैज्ञानिक ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि तकनीकी पार्क में खड़ी फसलों का बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ ओंकार नाथ सिंह, निदेशक अनुसंधान डॉ पीके सिंह, डीन एग्रीकल्चर डॉ डीके शाही एवं 15 सदस्यीय वैज्ञानिकों के साथ भ्रमण किया। साथ ही फसल के प्रदर्शन पर चर्चा एवं फसल के विकास की तकनीकी समीक्षा की। कृषि मंत्रालय ने 28 अप्रैल को जारी आंकड़ों में इस वर्ष गर्मियों की फसल यानी जायद फसल का रकबा मामूली घटकर 65.29 लाख हेक्टेयर बताया है जबकि दलहन और मोटे अनाज का रकबा बढ़ी है। आंकड़ों के मुताबिक चालु गरमा खेती में मोटे अनाज का बुवाई क्षेत्र 10.19 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 10.86 लाख हेक्टेयर बताया गया है। यूएनओ द्वारा घोषित अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष-2023 में यह एक सकारात्मक संकेत है। कुलपति डॉ ओंकार नाथ सिंह की पहल पर मिलेट्स शोध से जुड़े वैज्ञानिकों ने 18 मार्च को गरमा फसल के रूप में प्रोसो मिलेट्स, लिटिल मिलेट्स एवं रागी की बुवाई की।

राष्ट्रीय लोक अदालत में निबटे 83 हजार से अधिक मामले, 7.5 करोड़ से अधिक का SETTLEMENT

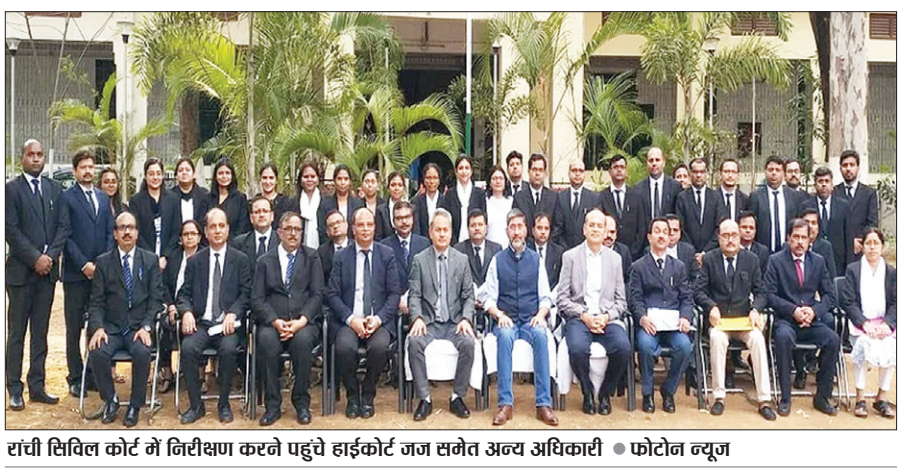

रांची सिविल कोर्ट में निरीक्षण करने पहुंचे हाईकोर्ट जज समेत अन्य अधिकारी ● फोटोन न्यूज

SPECIAL REPORTER RANCHI : राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल 83 हजार से अधिक वादों का निष्पादन किया गया। इस दौरान 7।5 करोड़ से अधिक का सेटलमेंट किया गया। झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के कार्यपालक अध्यक्ष के निर्देश पर रांची सिविल कोर्ट में शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन मुख्य अतिथि कुटुम्ब न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश रशिकेष कुमार ने किया। इस मौके पर अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश संजीता श्रीवास्तव, एमएसीटी के पीओ मनीष, डालसा के सचिव राकेश रंजन, आरडीबीए के अध्यक्ष शंभु प्रसाद अग्रवाल, आरडीबीए के सचिव संजय विद्रोही, न्यायिक पदाधिकारी, मध्यस्थ, पैनल अधिवक्ता, पीएलवी एवं अन्य लोग कार्यक्रम में उपस्थित थे। राष्ट्रीय लोक अदालत के आयोजन के दौरान झारखंड उच्च न्यायालय के न्यायाधीश व झालसा के कार्यकारी अध्यक्ष जस्टिस एस चंद्रशेखर, हाईकोर्ट के जज गौतम कुमार चौधरी, झालसा से राजेश कुमार समेत अन्य न्यायिक अधिकारी रांची सिविल कोर्ट पहुंचे और राष्ट्रीय लोक अदालत का निरीक्षण किया। राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन के लिए न्यायिक दण्डाधिकारियों के लिए 23 बेंच एवं कार्यपालक दण्डाधिकारियों के लिए 19 बेंच का गठन किया गया था। जिसमें कुल 83 हजार से अधिक वादों का निष्पादन किया गया एवं 7.5 करोड़ से अधिक का सेटलमेंट किया गया। इसमें प्रीलिटिगेशन एवं लिटिगेशन के वादों का निष्पादन सम्मिलित है। राष्ट्रीय लोक अदालत के आयोजन के लिए पूर्व से जिला प्रशासन के सहयोग से 6 लाख से अधिक बेनिफिशरीज को विभिन्न योजनाओं के तहत लाभ दिलाया गया। करीब 125 करोड़ से अधिक राशि की योजनओं से लाभुकों को लाभ दिया गया।

HC के तीन जजों ने सिविल COURT का किया निरीक्षण

झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार के निर्देश पर रांची सिविल कोर्ट में शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत लगाई गई। इसमें 80 हजार से ज्यादा मामले निष्पादित किये गये। राष्ट्रीय लोक अदालत के दौरान हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस एस चंद्रशेखर, न्यायाधीश राजेश कुमार और न्यायाधीश गौतम कुमार चौधरी लोक अदालत की गतिविधियों को देखने के लिए सिविल कोर्ट पहुंचे। इस दौरान उन्होंने सभी न्यायिक पदाधिकारियों को दिशा-निर्देश भी दिये। राष्ट्रीय लोक अदालत के सफल आयोजन के लिए न्यायिक दंडाधिकारियों के लिए 23 बेंच एवं कार्यपालक दंडाधिकारियों के लिए 19 बेंच का गठन किया गया था। राष्ट्रीय लोक अदालत में कुल 83 हजार से अधिक वादों का निष्पादन किया गया। 7.5 करोड़ से अधिक रुपये की समझौता राशि की वसूली विभिन्न वादों में की गई। जिसमें प्रीलिटिगेशन एवं लिटिगेशन के वादों का निष्पादन भी शामिल हैं।

रांची के हर्ष आनंद को एशियाई प्रो पॉवरलिफ्टिंग में मिला दोहरा खिताब, जीता दो स्वर्ण पदक

जीत के बाद भारत का झंडा लिए हर्ष आनंद ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS RANCHI : बेंगलुरू में चल रहे 10 मई से 14 मई तक आयोजित एशियाई एवं विश्व प्रो पॉवरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में रांची के हर्ष आनंद दो गोल्ड मैडल अपने नाम करने में कामयाब रहे। उन्होंने 75 किलोग्राम भार वर्ग में कुल 317.5 किलोग्राम वजन उठाकर पुश पुल्ल में गोल्ड एवं 210 किलोग्राम उठाकर एकल डेडलिफ्ट प्रतिस्पर्धा में भी स्वर्ण पदक अपने नाम किया। पदक जीतकर घर लौटे हर्ष आनंद का रांची एयरपोर्ट पर पॉवरलिफ्टिंग संघ और खेलप्रेमियों ने गर्मजोशी से स्वागत किया। ये जानकारी हर्ष के कोच तथा झारखंड पॉवर लिफ्टर्स एसोसिएशन के सचिव अशोक कुमार गुप्ता ने दी।

बाइक की टक्कर से युवक की मौत

RANCHI : रातू थाना क्षेत्र के रातू-ठाकुरगांव सड़क पर मलमाडु के समीप शुक्रवार की रात सड़क दुर्घटना में एक युवक की मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार बाइक सवार ने एक युवक को टक्कर मार दिया। इस घटना में हुरहुरी निवासी युवक सलीम अंसारी की मौत हो गई जबकि पल्सर बाइक चालक मलमाडु निवासी सुनील उरांव गंभीर रूप से घायल हो गया। उसका इलाज झखराटांड़ स्थित निजी हॉस्पिटल में चल रहा है। दुर्घटनाग्रस्त बाइक को पुलिस ने जब्त कर लिया है। इस संबंध में मृतक के परिजनों ने रातू थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है।

बनहौरा में PM आवास के लिए रॉक हटाने को 64.81 लाख की योजना को मिली मंजूरी

PHOTON NEWS RANCHI : रांची के पंडरा स्थित बनहौरा में प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी से बनाये जा रहे आवास योजना में वहां पर स्थित पत्थल काटकर हटाये जाने व दीवाल बनाने के लिए प्राक्कलित राशि से अतिरिक्त 64।81 लाख रुपये की योजना की घटनोत्तर स्वीकृति प्रदान कर दी गयी हे। मंत्रिपरिषद के फैसले के बाद नगर विकास विभाग ने इस संबंध में आदेश जारी कर दिया गया है। दरअसल, केंद्र प्रायोजित इस योजना के तहत बनहोरा में 180 पीएम आवास शहरी से निर्माण स्वीकृत हुआ था। इसके तहत बनहौरा 2 एकड़ जमीन आवंटित की गयी थी जिसमें आवास बनना था। राज्य सरकार ने 13 करोड़ से अधिक की लागत तक की योजना की स्वीकृति के लिए राशि का प्रावधान रखा था। तय डीपीआर के अनुसार रांची नगर निगम ने लगभग 11 करोड़ की लागत से इसपर एमओयू किया। काम प्रारंभ होने के वक्त यह बात सामने आयी कि अधिकारियों की गलत से जो भूमि पीएम आवास के लिए चिंहित्त की गयी और परामर्शी को दिखायी गयी वह दूसरी थी। ऐसे में इसका डीपीआर ही गलत बन गया। बाद में सीओ ने इसके निर्माण के लिए भूमि का फिर से चयन के लिए भेजा कहा कि वहां पर के पत्थल हटाने के लिए अधिक पैसे की जरूरत होगी। साथ ही बांउड्रीवल में भी अधिक राशि की जरूरत होगी। पूरे मामले को नगर विकास विभाग की चीफ इंजीनियर के पास भेजा गया, उन्होंने सक्षम प्राधिकार से स्वीकृति लेकर इसका निर्माण कार्य करने की सलाह दी। जिसके बाद सारी प्रक्रिया पूरी कर कैबिनेट की मंजूरी ली गयी थी।

डाल्टेनगंज विधायक आलोक चौरसिया V/S के एन. त्रिपाठी: बहस पूरी, अब 19 मई को कानूनी बिंदु पर होगी सुनवाई

आलोक चौरसिया की ओर से कहा गया- जैक कोई कार्रवाई या आदेश पारित करता है तो उसे न्यायालय में चैलेंज नहीं किया जा सकता

SPECIAL REPORTER RANCHI : डाल्टेनगंज विधायक आलोक चौरसिया के निर्वाचन को चुनौती देने वाली चुनाव याचिका की सुनवाई झारखंड हाईकोर्ट में हुई। मामले में दोनों पक्षों की सुनवाई पूरी हो गई। अब कुछ कानून पहलू पर सुनवाई के लिए अगली सुनवाई 19 मई निर्धारित की गई है। मामले में विधायक आलोक चौरसिया की ओर से वरीय अधिवक्ता वीपी सिंह ने पैरवी की। उनकी ओर से बहस के दौरान कोर्ट को बताया गया कि झारखंड एकेडमिक काउंसिल (जैक) एक्ट की धारा 28 के अनुसार जैक कोई कार्रवाई या आदेश पारित करता है तो उसे न्यायालय में चैलेंज नहीं किया जा सकता है। आलोक चौरसिया की ओर से यह भी कहा गया कि जब जैक ने उनके जन्मतिथि में संशोधन कर दिया है और वह अब ठीक हो चुका है तो उसे किसी अदालत में चैलेंज नहीं किया जा सकता है, तो फिर इलेक्शन पिटिशन में कैसे इसे चुनौती दी जा सकती हैं। उनकी ओर से दलील दी गई कि जैक द्वारा आलोक चौरसिया के जन्म तिथि में किए गए सुधार के संबंध में अदालत कोई आदेश पारित नहीं कर सकता है। प्रार्थी केएन त्रिपाठी का आरोप है कि आलोक चौरसिया ने अपने जन्मतिथि में बदलाव किया है। जबकि आलोक चौरसिया के जन्मतिथि में जो बदलाव हुआ है, वह जैक के अधिकार क्षेत्र में आता है, जैक को जन्म तिथि में सुधार करने का कानूनी पावर है। आलोक चौरसिया की ओर से गलती से फॉर्म भरते समय जन्मतिथि वर्ष1995 का भर दिया गया था। बाद में उन्हें महसूस हुआ कि गलत भरा गया है लेकिन वे उस समय ठीक नहीं करा सके थे।

पर्यावरण दिवस पर वन विभाग के पदाधिकारी पूर्वजों के नाम पर लगायेंगे एक-एक पेड़

PHOTON NEWS RANCHI : पांच जून को पर्यावरण दिवस है। इसको लेकर वन विभाग तैयारी में जुट गया है। लेकिन, इस बार विभाग कुछ अलग करने की सोच रहा है। पीसीसीएफ संजय श्रीवास्तव ने कहा है कि पर्यावरण की सुरक्षा की शुरूआत सारे पदाधिकारी अपने ऑफिस से ही करेंगे। इस दिन सभी पदाधिकारी अपने पूर्वजों के नाम पर एक-एक पेड़ लगायेंगे। उन्होंने कहा कि लोगों को पर्यावरण की सुरक्षा को लेकर जागरुक किया जायेगा। इस अभियान में राजधानी के लोगों का भी सहयोग लिया जायेगा। साथ ही विभिन्न तरह के कार्यक्रमों को माध्यम से लोगों को स्वच्छता और पर्यावरण सुरक्षा का संदेश दिया जाएगा। इसमें स्कूली बच्चों की भी भागीदारी रहेगी, जो प्रतियोगिताओं में शामिल होकर खुद भी और दूसरों को भी जागरूक करेंगे। वन विभाग के प्रधान मुख्य वन संरक्षक संजय श्रीवास्तव ने कहा कि लाइफ मिशन कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इसके माध्यम से लोगों को यह बताया जाएगा कि स्वच्छ पर्यावरण के लिए सेव एनर्जी, सेव वाटर, से नो टू पॉलिथीन, सस्टेनेबल फूड सिस्टम, और रिड्यूस ई वेस्ट जैसी आदतों का जीवन में महत्वपूर्ण योगदान है।

रामगढ़ में LIC Office और Kohinoor Jewellers लूटकांड का खुलासा, पांच गिरफ्तार, हथियार बरामद

PHOTON NEWS RAMGARH

प्रेस कांफ्रेस करते पुलिसकर्मी, लूट में शामिल अपराधी व बरामद हथियार ● फोटोन न्यूज

शहर में एलआईसी ऑफिस और कोहिनूर ज्वेलर्स लूटकांड का खुलासा करते हुए पुलिस ने पांच आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया है। इनके पास से दो देसी कट्टा, चार जिंदा गोली, धारदार हथियार, लूटी गई रकम और चांदी के जेवर बरामद हुए हैं।

रामगढ़ एसपी पीयूष पांडे ने शनिवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बताया कि 11 अप्रैल को एलआईसी ऑफिस के सामने अपराधियों ने ददन कुमार को गोली मारकर 2934447 रुपये लूट लिए थे। इसके बाद 8 मई को अपराधियों के इसी ग्रुप ने दामोदर पुल के निकट कोहिनूर ज्वेलर्स में घुसकर कर्मचारियों को बंधक बनाया और चांदी के जेवर लूट लिए। इस मामले में सबसे पहले अंतर्राज्यीय लुटेरा गिरोह के मुख्य सरगना विभास पासवान को पकड़ा गया। वह मूल रूप से बिहार राज्य के नालंदा जिला का रहने वाला है। उसकी गिरफ्तारी के बाद इन दोनों लूटकांड में शामिल सभी पांच बदमाश पकड़े गए।

गिरफ्तार आरोपितों में हजारीबाग जिले के कोर्रा थाना क्षेत्र अंतर्गत नगवां गांव निवासी संतोष पांडे, बरही थाना क्षेत्र के गोरिया करमा गांव निवासी महेंद्र चौधरी, पलामू जिले के हुसैनाबाद थाना क्षेत्र अंतर्गत कजरात नावाडीह निवासी कुदूश अंसारी जो कि वर्तमान में चेनगड्डा बरकाकाना ओपी क्षेत्र में रह रहा है। इनके साथ उसका एक और साथी चंडीगढ़ दा निवासी इनामुल अंसारी को पकड़ा गया।

उनके पास से पुलिस ने लूट की रकम 25,500 रुपये नकदी, दो देसी कट्टा, एक ऑटोमेटिक चाकू, चार जिंदा गोली और चांदी के कुछ जेवर बरामद किए हैं। एसपी ने बताया कि पकड़े गए सभी अपराधी बिहार झारखंड के कई जिलों में चर्चित लूट और डकैती की वारदातों को अंजाम दे चुके हैं। इनका पूर्व से आपराधिक इतिहास भी रहा है।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 2050 मामलों का निष्पादन

PHOTON NEWS RAMGARH

रामगढ़ व्यवहार न्यायालय में शनिवार को डालसा के अध्यक्ष सह प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश बृजेश कुमार गौतम के निर्देश पर राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस लोक अदालत में कुल 2050 मामलों का निष्पादन आपसी सहमति के आधार पर किया गया है। इस लोक अदालत में केस के सभी पक्षकारों को नोटिस के माध्यम से बुलाया गया था। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश बृजेश कुमार गौतम ने डालसा के सचिव दिलीप राजेश्वर तिर्की को एक महीने पहले ही प्रिकॉन्सिलेशन सिटिंग शुरूआत करने का निर्देश दिया था। साथ ही 7 बेंच का गठन कर मामलों के निष्पादन हेतु पहल करने को कहा था। इस लोक अदालत में कुल सेटेलमेंट अमाउंट 2 करोड़ 80 लाख 92 हजार 319 रुपए तय की गई है।

लोक अदालत में बैंक रिकवरी से संबंधित 1200 मामले आए थे। जिसमें से 218 मामलों का निष्पादन किया गया। जिसमें कुल सेटलमेंट अमाउंट 16062027 तय की गई। अपराध के सुलहनीय मामले 355 लाए गए थे, जिनमें से 336 का निष्पादन किया गया। जिसका सेटेलमेंट अमाउंट 1843712 रुपए तय की गई। बिजली बिल से संबंधित पांच मामले थे, जिनमें से तीन का निष्पादन किया गया। जिसका सेटेलमेंट अमाउंट 52000 रुपए तय किया गया। एमएसीटी के 16 मामले में से आठ का निष्पादन किया गया। इसका सेटेलमेंट अमाउंट 53 लाख 90000 तय किया गया। वैवाहिक विवाद से संबंधित 55 मामले थे। इनमें से 32 मामलों का निष्पादन हुआ। नारकोटिक्स से संबंधित 6 मामले लोक अदालत में आए थे। जिनमें से 5 का निष्पादन किया गया। जिसका सेटेलमेंट अमाउंट 9 लाख 56 हजार तय किया गया।

सिविल केस एक मामला निष्पादित किया गया। ट्रैफिक चालान से संबंधित 1165 मामले निष्पादित किए गए। जिसमें सेटेलमेंट अमाउंट 12 लाख 12 हजार 33 रुपए तय किया गया। रेवेन्यू के 55 मामलों का निष्पादन लोक अदालत में हुआ। सरकारी सेवा और उनके पेंशन से संबंधित तीन मामलों का निष्पादन हुआ। जिसका सेटेलमेंट अमाउंट 18 लाख 65 हजार 330 रुपए तय किया गया। पानी के बिल से संबंधित 224 मामलों का निष्पादन हुआ, जिसका फुल सेटेलमेंट अमाउंट 7 लाख 11 हजार 217 रुपए तय किया गया।

बोकारो में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन

BOKARO : प्रधान जिला जज सह अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकार रंजना अस्थाना की अध्यक्षता में आज न्याय सदन व्यवहार न्यायालय बोकारो तथा व्यवहार न्यायालय परिसर तेनुघाट में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन हाईब्रिड मोड पर किया गया है। साथ ही जिले के सभी प्रखंडों में जिला विधिक सशक्तिकरण शिविर का भी आयोजन किया गया।

प्रधान जिला जज रंजना अस्थाना, उपायुक्त कुलदीप चौधरी, पुलिस अधीक्षक चंदन कुमार झा, प्रिजाइडिंग पदाधिकारी लेबर कोर्ट अनुज कुमार, वन प्रमंडल पदाधिकारी रजनीश कुमार, प्रधान न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय आलोक कुमार दुबे एवं अनुमंडल पदाधिकारी चास दिलीप प्रताप सिंह शेखावत ने दीप प्रज्वलित कर इसकी शुरूआत की। लोक अदालत में कुल 36 बेंच लगाए गए है, जिसमें व्यवहार न्यायालय बोकारो में 17 एवं व्यवहार न्यायालय तेनुघाट में 09 बेंच लगाए गए। इसमें न्यायालय में लंबित सुलह योग्य आपराधिक मामले, मोटर दुर्घटना दावा, पारिवारिक, राजस्व से सम्बंधित, बिजली बिल, पानी बिल एवं अन्य बिल से संबंधित, भूमि अधिग्रहण सम्बंधित सहित अन्य सिविल वाद इत्यादि मामलों को रखा गया। इस दौरान जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश चतुर्थ बोकारो योगेश कुमार सिंह, सीजीएम दिव्या मिश्रा, अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी लूसी सोसेन तिग्गा, डीएलएसए सचिव निभा रंजना लकड़ा, पीपी बार एसोसिएशन अध्यक्ष सहित न्यायिक पदाधिकारी एवं संबंधित विभागों के पदाधिकारी सहित विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय लोक अदालत में 6258 वादों का निष्पादन, 16 करोड़ से अधिक की वसूली

KODERMA : जिला व्यवहार न्यायालय परिसर में शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। इसका विधिवत उद्घाटन प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह जिला विधिक सेवा प्राधिकार के अध्यक्ष विरेन्द्र कुमार तिवारी सहित अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। राष्ट्रीय लोक अदालत में दस बेंच के माध्यम से कुल 6258 वादों का निष्पादन किया गया, जिसमें 449 लंबित वाद तथा प्री-लिटिगेशन के 5635 मामले शामिल थे। विभिन्न विभागों से कुल 16 करोड़ 01 लाख 91 हजार 821 रुपये राजस्व की वसूली की गई। इस मौके पर प्रफहण न्यायाधीश कुटुंब न्यायालय सैयद सलीम फातमी, डीडीसी ऋतुराज, जिला जज द्वितीय अजय कुमार सिंह, जिला जज तृतीय तरुण कुमार, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष जगदीश सलूजा, सचिव मनीष सिंह, प्राधिकार सचिव अभिषेक प्रसाद, मुंसिफ दानिश नवाज, न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी शिवांगी प्रिया, न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी जूही कुमारी, प्रशांत कुमार वर्मा, एलडीएम अजय राणा, स्टेट बैंक के मुख्य शाखा प्रबंधक वन विभाग, उत्पाद विभाग, बिजली विभाग के पदाधिकारी, विभिन्न बैंकों के अधिकारी-कर्मचारी और न्यायालय कर्मियों सहित पक्षकार मौजूद थे।

राष्ट्रीय लोक अदालत में सुलह-समझौते से 17.83 करोड़ की वसूली

राष्ट्रीय लोक अदालत में अपने केस की जानकारी लेते लोग ● फोटोन न्यूज

PHOTON NEWS DUMKA

राष्ट्रीय लोक अदालत में सुलह-समझौते के आधार पर 7353 वादों का निपटारा करते हुए 17,83,33,064 रुपये की वसूली शनिवार को हुई। इसके अलावा 4,28,712 लाभुकों को विभिन्न योजनाओं में 84,50,67,580 रुपये का लाभ दिया गया। इसकी जानकारी जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव विश्वनाथ भगत ने दी।

उन्होंने बताया कि प्राधिकार अध्यक्ष सह प्रधान जज अनिल कुमार मिश्रा के अध्यक्षता में आयोजित लोक अदालत में आठ बेंचों का गठन हुआ था। इसमें मुख्य रूप से पारिवारिक वाद, दुर्घटना वाद, लैंड एक्विजिशन, एमएसीटी, सिविल अपील, क्रिमिनल अपील, बैंक रिकवरी, लीगल मेट्रोलॉजी एक्ट, क्रिमिनल केस, माइनिंग केस, प्री लिटिगेशन मैटर, पुलिस एक्ट, माइनर एक्ट, एक्सक्यूटिव केस, सर्टिफिकेट केसेस, कंज्यूमर फोरम आदि मामलों की सुनवाई हुई।

प्रेमिका और उसके पति पर फायरिंग, बाल-बाल बचे

PHOTON NEWS GIRIDIH

जिले के बिरनी थाना इलाके के तेतरिया स्लायडीह गांव में शुक्रवार की देर रात एक सनकी प्रेमी ने शादी-शुदा प्रेमिका रोजी प्रवीन और उसके पति सदाम पर तीन राउंड गोली फायर कर दी। किस्मत अच्छी रही कि दोनों बाल-बाल बच गए। वारदात में दो युवकों के शामिल होने की बात कही जा रही है।

घटना की जानकारी मिलने के बाद एसडीपीओ नौशाद आलम और बिरनी थाना प्रभारी मृत्युंजय सिंह भी घटनास्थल पहुंचे और जांच शुरू की। पुलिस के मुताबिक दो युवकों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। एक पिस्तौल और एक खोखा भी बरामद हुआ है है। एसडीपीओ नौशाद आलम ने इसकी पुष्टि करते हुए बताया कि मामला अभी तक की जांच में प्रेम प्रसंग के रूप में ही सामने आया है। पुलिस उसी एंगल से जांच कर रही है।

जानकारी के अनुसार रोजी प्रवीन का बिरनी थाना इलाके के बरवा चतार गांव के किसी युवक नजाम अंसारी से प्रेम प्रसंग चल रहा था। इसी बीच उसकी शादी तेतरिया स्लायडीह गांव के सदाम से हो गई। इसी गुस्से में नजाम ने भाई सद्दाम के साथ मिलकर शुक्रवार की देर रात सो रही प्रेमिका और उसके पति पर तीन राउंड गोलियां चलाईं।

कर्नाटक में कांग्रेस की जीत पर रामगढ़ में फूटे पटाखे

RAMGARH : कर्नाटक विधानसभा चुनाव का नतीजा आने के बाद कांग्रेस पार्टी में खुशी की लहर दौड़ गई। कर्नाटक में मिली बहुमत पर खुशी जाहिर करते हुए रामगढ़ के सुभाष चौक पर कांग्रेसी नेताओं ने पटाखे फोड़े। इस दौरान कांग्रेस के नेताओं ने कहा कि कर्नाटक की जनता ने कांग्रेस पर भरोसा जताकर यह साबित किया है कि उन्हें राहुल गांधी और प्रियंका गांधी पर भरोसा है। झारखंड प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष शहजादा अनवर ने कहा कि कर्नाटक की जनता धन्यवाद की पात्र हैं। इस जीत का श्रेय राहुल गांधी, प्रियंका गांधी, मलिकार्जुन खरगे एवं कर्नाटक कांग्रेस के सामूहिक नेतृत्व को जाता है।

निरंतर मेहनत करें, सफलता आपको जरूर मिलेगी : बिशप विनय कंडुलना

PHOTON NEWS KHUNTI

तोरपा स्थित चिल्ड्रेन ऑफ द न्यू डॉन स्कूल में शनिवार को स्कूल की जुबली धूमधाम से मनाई गई। जुबली समारोह में विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण, शिक्षा और विभिन्न प्रांतों की संस्कृति से जुड़े मनोहारी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। छोटे-छोटे बच्चों के आदिवासी डांस इस प्रोग्राम का मुख्य आकर्षण रहा। मौके पर मुख्य अतिथि रोमन कैथोलिक खूंटी के बिशप विनय कंडुलना ने कहा कि आजकल के बच्चे को देखा जाता है कि कम अंक आने पर वे निराश हो जाते है। उन्हें निराश नही होना है पढ़ाई के मूलमंत्र के साथ आगे बढें सफलता जरूर मिलेगी। अब हमारे गांव के स्कूल शहरों से कम नही हैं। हर प्रतियोगिता में शामिल होने का दमखम रखता है हमारा गांव।

पूर्व प्रिंसिपल बिमला वर्गीज ने कहा कि स्कूल की स्थापना सन 1999 में कुछ बच्चों के साथ की गई थी और आज परमात्मा की कृपा से इस स्कूल की विशाल बिल्डिंग में हजारो बच्चे शिक्षा ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों की पढ़ाई के मामले में विद्यालय पूरी तरह प्रतिबद्ध है। विद्यालय का मुख्य लक्ष्य बच्चों को संस्कारी व अच्छे नागरिक बनाना हैं। क्योंकि जो बच्चे उच्च शिक्षित हो जाते हैं वह कभी मुडकर पीछे नहीं देखते। सोफिया कॉलेज के पूर्व प्रिंसिपल डॉ सिस्टर अनन्दा अमृतमहल ने कहा की बच्चे अपनी प्रतिभा को पढ़ाई व खेलकूद से ही निखार सकता है। इससे पूर्व मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित अतिथियों को अंगवस्त्र देकर सम्मनित किया गया। साथ ही अब तक स्कूलों में अच्छे अंकों के साथ टॉपर हुए है उन्हें पुरस्कृत किया गया।

श्रीश्री विद्या मंदिर हाई स्कूल में कौशल विकास केंद्र का उद्घाटन

बहुत कम लोग होते हैं, जो सिर्फ समाज व देश के लिए जीते हैं : महेश पोद्दार

PHOTON NEWS KHUNTI

श्रीश्री रविशंकर के 67वें जन्मोत्सव के अवसर तोरपा प्रखंड के कुदरी गांव में संचालित श्रीश्री विद्या मंदिर हाई स्कूल कुदरी में कौशल विकास केंद्र का उद्घाटन शनिवार को किया गया। मौके पर स्कूल परिसर केक काट कर श्री श्री का जन्मदिन मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व राज्यसभा सांसद महेश पोद्दार, विशिष्ट अतिथि तोरपा विधायक कोचे मुंडा, व्यक्ति विकास केन्द्र इंडिया संस्था के अध्यक्ष प्रसन्ना प्रभु, उमेद मेल जैन, सुनील गुप्ता, चंद्रकांत, प्रवीण कुमार द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर और दीप प्रज्वलित कर किया गया।

मौके पर मुख्य अतिथि ने कहा कि किसी व्यक्ति की महानता इसीमें है कि अपने लिए तो सब जीते है, लेकिन बहुत कम लोग करते हैं, वह सिर्फ समाज और देश के लिए। ऐसे लोग पूज्य और प्रेरणादायी होते हैं। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों में सरकार एक रुपया भेजती है तो स्कूल में पच्चीस पैसे खर्च होता है और वही इस संस्था में कही से एक रुपया आता है, तो सवा रुपये खर्च किया जाता है। इस स्कूल में जितने भी बच्चे आएंगे, सभी का नामांकन निःशुल्क होगा। किसी को भी शिक्षा से वंचित नही रखा जाएगा। व्यक्ति विकास के अध्यक्ष प्रसन्ना प्रभु ने कहा कि श्री श्री विद्या मंदिर की संस्था पूरे विश्व के 180 देशों में है। इसमे लगभग अस्सी हजार बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जा रही है।

शिक्षा से ही दूर होगा अज्ञानता का अंधकार : कोचे मुंडा

मौके पर विधायक कोचे मुंडा ने कहा कि आदिवासी क्षेत्र में इतना बड़ा कौशल विकास केंद्र खोलना शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ा कदम है। उन्होंने कहा कि अज्ञानता रूपी अंधकार को दूर करने के लिए इसी तरह प्रकाश रूपी शिक्षा की आवश्यकता ह, तभी क्षेत्र का लोग आगे बढ़ेंगे और प्रधानमंत्री की सोच को साकार करेंगे। कुदरी कौशल केंद्र में अब महिलाएं भी वायरिंग का काम सीख सकती हैं। कार्यक्रम का मौके पर मुखिया प्रतिमा तिडू, गलेरिया लुगुन, शिशिर तोपनो, संगीता कच्छप, अगाथा भेंगरा, सोमारी लकड़ा आर्ट ऑफ लिविंग के विमला तिग्गा, तुलु सरकार, विकास महतो, सुलोचना कुमारी, मीरा कुमारी, सोनाराम महतो, संगीता झा, रविशंकर, राजकुमार साहू सहित अभिभावक और स्कूली बच्चे शामिल थे।

BRIEF NEWS

दुमका में सर्पदंश से बालक की मौत

DUMKA : सर्पदंश से आठ वर्षीय बालक की मौत हो गई। घटना जिले के हंसडीहा थाना क्षेत्र के नोनीहाट स्थित चंपातरी गांव में शनिवार की सुबह घटी। मृतक बालक रोहित उर्फ आकाश मंडल है। जानकारी के अनुसार रोहित दैनिक कार्य के लिए घटर की गली में गया, जहां जहरीले सांप ने उसे काट लिया। तीन घंटे तक झाड़फूंक के बाद जब हालत और बिगड़ गई तो परिजन मेडिकल कालेज अस्पताल लेकर गए, जहां चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। चिकित्सक का कहना था कि अगर परिजन समय पर अस्पताल लेकर आते तो शायद बालक की जान बच जाती। उल्लेखनीय है कि जिले में जनवरी से लेकर 13 मई तक सांप काटने की 25 घटनाएं हुई हैं, जिसमें तीन लोगों की ही जान गई जबकि समय पर इलाज मिलने की वजह से अन्य लोग बच गए।

लोहरदगा के बाजारटांड में वृद्धाश्रम का उद्घाटन

LOHARDAGA : सदर प्रखंड के मन्हो पंचायत स्थित बाजारटांड़ में वृद्धाश्रम का उद्घाटन शनिवार को राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने किया। होप संस्था से संचालित इस वृद्धाश्रम में फिलहाल नौ वृद्ध रहे हैं। उद्घाटन के मौके पर सांसद धीरज प्रसाद साहू ने कहा कि वृद्धजनों की सेवा करना मानवता के लिए सबसे पुनीत कार्य है। वृद्धजनों को सभी मूलभूत सुविधाएं भी मुहैया करायी जा रही हैं। इस वृद्धाश्रम को सशक्त बनाने के लिए हरसंभव कार्य हम सभी मिलकर करेंगे। इस दौरान सांसद द्वारा बेडरूम, कैटरिंग रूम, डाइनिंग रूम, किचेन, टॉयलेट आदि कमरों का निरीक्षण भी किया। इस मौके पर उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण, जिला परिषद अध्यक्ष रीना कुमारी, सांसद प्रतिनिधि अशोक यादव, होप संस्था की मनोरमा एक्का सहित कई प्रबुद्ध लोग तथा आसपास के ग्रामीण मौजूद थे।

मुरहू में युवक की धारदार हथियार से हत्या

KHUNTI : मुरहू थाना क्षेत्र के इठ्ठे गांव के एक खेत से शनिवार को पुलिस ने एक युवक का शव बरामद किया। युवक की धारदार हथियार से हत्या कर शव को खेत में फेंक दिया गया था। शव की पहचान तोरपा थाना के गुड़गुड़ चुआं बड़का टोली गांव निवासी 32 वर्षीय मसीह कंडीर उर्फ बिरसा के रूप में हुई। इस संबंध मृतक के पिता कालंग कंडीर ने पेरका गांव के सोमा कैथा के विरुद्ध हत्या का आरोप लगाते हुए मुरहू थाने में नामजद प्राथमिकी दर्ज कराई है। आरोपित सोमा कैथा फरार है, जिसकी तलाश के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है। पुलिस ने शव का सदर अस्पताल में पोस्टमार्टम कराने के स्वजनों को सौंप दिया। एसडीपीओ अमित कुमार ने बताया कि मृतक और आरोपित दोनों का आपराधिक इतिहास रहा है। पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही फरार आरोपित सोमा कैथा को गिरफ्तार कर मामले का खुलासा कर लिया जाएगा।

खूंटी में यूथ कांग्रेस ने मनाया कर्नाटक में जीत का जश्न

KHUNTI : कर्नाटक विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की शानदार जीत पर यूथ कांग्रेस के कार्यकताओं ने जिला मुख्यालय खूंटी में लोगों के बीच मिठाइयां बांटकर और पटाखे फोड़कर जीत का जश्न मनाया। शनिवार को मतगणना के दौरान रुझानों में जब कांग्रेस की बढ़त होने लगी, तभी से कांग्रेसियों का उत्साह बढ़ने लगा। दोपहर के के बाद जब कांग्रेस की जीत पक्की हो गई, तब यूथ कांग्रेस के कार्यकारी जिलाध्यक्ष अरुण सांगा के नेतृत्व में कार्यकर्ता सड़क पर उतरे और शहर के प्रमुख नेताजी चौक पर जीत का जश्न मनाने लगे। इस मौके पर कांग्रेस के प्रदेश सचिव वेद प्रकाश मिश्रा, युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष कुणाल, प्रखंड 20 सूत्री सदस्य मो. सोहेल, खूंटी प्रखंड अध्यक्ष अनमोल, बहा मुंडा, कैफी, राजू, जिला महासचिव शकील, खूंटी जिला उपाध्यक्ष सिब्लू खान, आफताब आलम सहित युवा कांग्रेस के अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

छात्र-छात्राओं के लिए करियर काउंसलिंग आज

KHUNTI : बिरसा कॉलेज बहुदेशीय भवन, खूंटी में रविवार को करियर काउंसलिंग काय आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम की शुरूआत सुबह दस बजे होगी। कार्यक्रम में एक हजार से अधिक बच्चे भाग लेंगे। इस सबंध में जिला प्रशासन द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि जिले के छात्र-छात्राओं के उज्वल भविष्य और करियर में नये अवसर तलाशने के लिए उचित मार्गदर्शन उपलब्ध कराने की दिशा में जिला प्रशासन द्वारा सकारात्मक पहल की जा रही है। इस उद्देश्य से नई दिशा में, स्कूली स्तर पर करियर काउंसलिंग सुनिश्चित करने के लिए पैनल चर्चा सत्र आयोजित किया जा रहा है, ताकि बच्चे अपनी रुचि के अनुरूप करियर का चयन कर सकें।

खसरा बीमारी से कदमा में बच्ची की मौत डब्ल्यूएचओ ने स्वास्थ्य विभाग से मांगी रिपोर्ट

JAMSHEDPUR : कदमा के शास्त्रीनगर ब्लॉक नंबर दो की रहने वाली नौ वर्षीय बच्ची की मौत मीजल्स रुबेला (खसरा) बीमारी से हो गयी। बच्ची का इलाज रिम्स में चल रहा था। मामले की जानकारी मिलने के बाद स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मचा हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने स्वास्थ्य विभाग से इसकी रिपोर्ट मांगी है। विभाग ने क्षेत्र में अलर्ट जारी करते हुए सर्वे का कार्य प्रारंभ कर दिया है। जिला सर्विलेंस विभाग व डब्ल्यूएचओ की टीम के साथ मिलकर सर्वे कर रहा है।

कुछ ऐसा था पूरा मामला : परिजनों से बताया कि बच्ची को 25 मार्च को बुखार हुआ। 27 मार्च तक शरीर में लाल-लाल चकत्ते पड़ गये। परिजन बच्ची को इलाज के लिए मानगो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गये। जहां से बच्ची को रिम्स भेज दिया गया। परिजनों ने बच्ची को 28 मार्च को रिम्स में भर्ती कराया। जांच के दौरान मीजल्स रुबेला की पुष्टि हुई। इसके बाद उसका इलाज चलता रहा। 15 अप्रैल को बच्ची की मौत हो गयी। जांच में पता चला कि बच्ची को खसरा को टीका नहीं लगा था। स्वास्थ्य विभाग ने गत आठ मई को जिला स्वास्थ्य विभाग को जांच रिपोर्ट देने को कहा। जिला स्वास्थ्य विभाग के अनुसार जिले में लंबे समय बाद खसरा बीमारी से मौत हुई है। पिछले वर्ष पोटका व पटमदा में एक-एक खसरा के मरीज मिले थे।

धीरेंद्र शास्त्री के ड्राइवर बने BJP के MP मनोज तिवारी, तेज प्रताप को दी नसीहत

AGENCY PATNA

बागेश्वर धाम सरकार पंडित धीरेंद्र शास्त्री जी पटना पहुंचे तो विरोध की सभी धाराएं अचानक गुम हो गईं। उनके आने से पहले विरोध और समर्थन की राजनीति जमकर हुई। शनिवार को जब धीरेंद्र शास्त्री पटना पहुंचे तो कहीं कोई विरोध नहीं दिखा। इस बीच भाजपा के सांसद मनोज तिवारी बागेश्वर बाबा के ड्राइवर बन गए। उन्होंने लालू के लाल तेज प्रताप यादव को भक्ति का नसीहत भरा पाठ भी पढ़ा दिया।

बागेश्वर बाबा का कार्यक्रम तय हुआ उस समय नीतीश सरकार के मंत्री प्रताप यादव ने बाबा के घेराव का ऐलान किया। इस पर बीजेपी के गिरिराज सिंह ने विरोधियों के हिम्मत को चुनौती दे दी। उसके बाद राजद के मंत्री

सुरेंद्र यादव एक कदम आगे आ गए और उन्होंने कहा कि मुझ में हिम्मत है, मैं बागेश्वर बाबा को रोकूंगा सहकारिता। मंत्री ने धीरेंद्र शास्त्री पर कथा में भूत प्रेत के नाम पर मां बहनों को नचाने का गंभीर आरोप भी लगाया। लेकिन, शनिवार को कोई सामने नहीं आया।

एयरपोर्ट पर मनोज तिवारी धीरेंद्र शास्त्री के साथ पहुंचे। जिस कार से बागेश्वर सरकार को एयरपोर्ट से होटल लाया गया उसकी ड्राइविंग सीट पर मनोज तिवारी बैठ गए और कथा वाचक शास्त्री जी कार ड्राइवर बन गए पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि यह उनके लिए बड़े सौभाग्य की बात है। पूरा बिहार बाबा का स्वागत कर रहा है।

राजद के नेताओं और खासकर मंत्री तेजप्रताप की ओर से धीरेंद्र शास्त्री का विरोध किए जाने के सवाल पर मनोज तिवारी ने कहा कि धार्मिक प्रवचनों का विरोध करना बिहार की संस्कृति में नहीं है। जो लोग अभी विरोध कर रहे हैं उन्हें भी आकर बाबा का कथा सुनना चाहिए। उन्होंने मंत्री तेजप्रताप को भी नसीहत दी और कहा कि तेज प्रताप बाबू बागेश्वर बाबा श्री हनुमान कथा सुनेंगे तो उन्हें अच्छा लगेगा। बाबा सभी धर्मों का सम्मान करते हैं। उनके आगमन से जाति और पार्टी की सीमाएं टूट जाएंगी। बिहार हनुमानमय हो जाएगा। तेज प्रताप जी को मैं फोन करूंगा। वह आकर कथा सुनेंगे तो अच्छा लगेगा।

आयोजक का मोबाइल बंद, खोजते रहे लोग

हनुमत कथा का आयोजन बागेश्वर बिहार फाउंडेशन के नाम पर किया गया लेकिन दो सगे भाईयों को छोड़कर कोई सामने नहीं आया। हाल यह कि धर्म के नाम पर धन का योगदान करने वाले भी दोनों भाईयों को खोजते रह गए।

वैष्णव पीठ के शिष्यों ने किया भोजन-पानी का प्रबंध

आयोजक के बेरूखी के कारण परेशान लोगों की सेवा तरेत पाली वैष्णव पीठ के स्वामी सुदर्शनाचार्य उर्फ सुमिरन बाबा के शिष्यों ने संभाल लिया। स्वामी जी के अनुयायी और शिष्यों की ओर से भोजन-पानी परोसा जा रहा है। हाल यह कि आयोजक ने स्थानीय लोगों को प्रवेश पत्र तक नहीं दिया। स्वामी सुदर्शनाचार्य ने कहा कि उन्हें आयोजक के प्रवेश पत्र और आमंत्रण से लेनादेना नहीं है। श्रद्धलुओं की सेवा करना धर्म है। मठ की ओर से आने वालों को भोजन-पानी परोसा जा रहा है। उनके शिष्य और अनुयायी इस कार्य में लगे हुए हैं।

पंडाल पर महिलाओं का कब्जा

बागेश्वर बाबा शाम चार बजे से कथा शुरू करने वाले हैं। नौबतपुर में बड़ी संख्या में महिलाएं कथा सुनने पहुंची हैं।आयोजन से पहले ही महिलाओं ने तीन लाख स्क्वायर फीट के पंडाल पर कब्जा कर लिया है। भीड़ देखकर आयोजक भी किनारे हो गए हैं।

दिल में बसता है बिहार, अब यहां बहार आएगी

धीरेंद्र शास्त्री ने पटना एयरपोर्ट पर कहा कि बिहार हमारी आत्मा है और यह हमारे दिल में बसता है। सच बोलें तो बिहार के लोगों जैसा हृदय कहीं के लोगों का नहीं होता है। बिहार में अब बहार आएगी। यह पूछने पर कि आप यहां हिंदू-मुस्लिम करेंगे तो आपका विरोध किया जाएगा, उन्होंने कहा कि वे हिंदू-मुस्लिम नहीं, बल्कि हिंदू-हिंदू करने वाले लोग है साहब। राजनेता नहीं है। हनुमत कथा सनातन धर्म की बात कहती है और हम उसकी ही बात करते हैं।

डीएम बोले-हमारा प्रयास शांति से संपन्न हो जाए कार्यक्रम

धीरेंद्र शास्त्री के कार्यक्रम पर जिलाधिकारी डॉ चंद्रशेखर सिंह ने कहा कि प्रशासन श्रद्धालुओं की सुरक्षा और विधि व्यवस्था के लिए अलर्ट है। कार्यक्रम स्थल से लेकर होटल तक सुरक्षा व्यवस्था की गई है। हमारा यही प्रयास है कि बागेश्वर बाबा का कार्यक्रम शांति से संपन्न हो जाए।

पटना पहुंची मुस्लिम श्रद्धालु, पैदल चलकर आया अंगद

AGENCY PATNA

बिहार के लोगों को हनुमंत कथा सुनाने के लिए बागेश्वर सरकार पंडित धीरेंद्र शास्त्री पटना पहुंच गए हैं। इधर लाखों की तादाद में बाबा के भक्त और हिंदू धर्म के श्रद्धालुओं ने नौबतपुर में डेरा डाल दिया हुआ है। पटना के चप्पे-चप्पे में बागेश्वर सरकार के भक्त पहुंच गए हैं। लाखों श्रद्धालु बागेश्वर सरकार का एक झलक पाने के लिए लालायित होकर सुबह से ही जहां जगह मिली वहीं इंतजार कर रहे हैं। इस बीच कुछ खास किस्म के श्रद्धालु बाबा से मिलने पहुंचे हैं। इनमें एक है 'मुन्नी खातून' और दूसरे हैं 'अंगद महाराज'।

तेजप्रताप ने एलान कर दिया कि बागेश्वर बाबा हिंदू-मुस्लिम कराने आ रहे हैं। इसलिए उनका विरोध करेंगे और एयरपोर्ट पर ही घेराव कर देंगे। तेज प्रताप की राजनीति को मुन्नी खातून नामक एक मुस्लिम महिला ने दिया है। मुन्नी खातून धर्म से मुसलमान है लेकिन उसकी आस्था बागेश्वर सरकार से जुड़ी है। यही कारण है कि वह पटना पहुंच गई है ताकि बागेश्वर सरकार धीरेंद्र शास्त्री से मिलकर अपनी समस्या का निदान पा सके। मुन्नी सुबह से ही होटल पनाश के पास बाबा का इंतजार कर रही है जहां पूरे 5 दिन धीरेंद्र शास्त्री विश्राम करेंगे। मुन्नी चुपचाप बाबा का इंतजार कर रही थी। इसी बीच लिबास के कारण कुछ मीडिया कर्मियों की नजर उस पर पड़ी। गरीबी से परेशान मुन्नी अपनी बात नहीं बता पा रही थी। पूछने पर उसने बताया कि वह कुछ समस्याओं से परेशान है जिसे बागेश्वर बाबा से ही मिलकर बताएगी। पत्रकारों के सवाल पर मुन्नी खातून ने बताया कि वह मुस्लिम समाज की महिला है लेकिन बागेश्वर सरकार पर उसे पूरा भरोसा है। उसे पता चला कि बाबा पटना आ रहे हैं तो जैसे तैसे पहुंच गई।

गिरिराज सिंह और रामकृपाल यादव भी पहुंचे

बाबा सुबह आठ बजे पटना एयरपोर्ट पहुंचे। भाजपा सांसद मनोज तिवारी और राम कृपाल यादव, गिरिराज सिंह उनके साथ दिखे। वहां उन्होंने स्वागत करने वाली भीड़ को कहा- बिहार हमार बा...रउआ सब ठीक बानी ना...।' हिंदू राष्ट्र के सवाल पर कहा कि वे राजनेता नहीं हैं। पटना आने से पहले उन्होंने अपने एक वीडियो ट्वीट लोगों को परिवार के साथ हनुमंत कथा में सादर आमंत्रित किया।

पटना एयरपोर्ट पर धीरेंद्र शास्त्री ● फोटोन न्यूज

CSP संचालक के गले पर चाकू रख लूटे 2.70 लाख

कुत्ते भौंके तो बदमाशों ने की तीन राउंड फायरिंग

AGENCY SIKHARNA

पूर्वी चंपारण जिले में हथियारबंद अपराधियों ने ग्राहक सेवा केंद्र (सीएसपी) से दो लाख 70 हजार रुपये लूट लिए गए। बदमाश सीएसपी केंद्र में ग्राहक बनकर आए थे।

मामला जिले के ढाका थानाक्षेत्र के सराठा गांव स्थित नहर के समीप के ग्राहक सेवा केंद्र (सीएसपी) का है। बताया जा रहा है कि सीएसपी केंद्र पर संचालक श्यामबाबू कुमार बैठे थे। इसी बीच बाइक पर तीन बदमाश आए।

बदमाशों ने सीएसपी केंद्र संचालक से स्टेट बैंक के खाते से तीस हजार रुपयों निकालने की बात कही। इसपर सीएसपी संचालक ने कहा कि दूसरे बैंक के खाता से दस हजार तक की ही निकासी हो पाएगी। इसपर बदमाशों ने कहा ठीक है पैसे निकालो।

संचालक श्याम बाबू ने ने जैसे ही आधार और फिंगर देने के लिए कहा, इस पर बदमाशों ने उन पर पिस्टल तान दी और काउंटर में रखे सभी कैश निकाल लिया। विरोध करने पर बदमाशों ने

संचालक के गले पर चाकू रख दिया।

इसके बाद बदमाश ने संचालक के गले से हनुमानी और दो मोबाइल भी लूट लिया। इसके बाद बदमाश भाग निकले। भागने के दौरान रास्ते में अपराधियों ने कुत्ते को निशाना बनाते हुए फायरिंग की। इस दौरान तीन राउंड गोली चलाई।

घटना की सूचना पर सिकरहना के पुलिस उपाधीक्षक अशोक कुमार और पुलिस इंस्पेक्टर मुकेशचंद्र कुंवर ने मौके पर पहुंचकर मामले की जांच की। थानाध्यक्ष ने बताया कि पुलिस अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी कर रही है।

कर्नाटक में कांग्रेस की जीत से सीएम नीतीश की विपक्षी एकता की मुहिम को होगा फायदा : JDU

AGENCY PATNA

जेडीयू के वरिष्ठ नेता व सांसद बशिष्ठ नारायण सिंह ने कहा कि कर्नाटक चुनाव परिणाम ने यह बताया कि भाजपा अपराजेय नहीं है। अगर देश की विपक्षी पार्टियां एकजुट हो जाएं तो भविष्य में बहुत बड़ा परिवर्तन देखने को मिलेगा। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विपक्षी एकता की जो मुहिम शुरू की है, इस चुनाव परिणाम से उस मुहिम को और बल मिलेगा। कहना गलत नहीं होगा कि यह चुनाव परिणाम उस मुहिम पर भी मुहर है।

जदयू मुख्यालय में पत्रकारों से बातचीत में राज्यसभा सांसद ने कहा कि कर्नाटक चुनाव परिणाम

सीएम नीतीश कुमार पत्रकारों से बातचीत करते हुए ● फोटोन न्यूज

ने स्पष्ट संदेश दिया है कि धार्मिक उन्माद और भावनात्मक मुद्दों के आधार पर देश नहीं चल सकता है। यह देश बहुत बड़ा है। यहां आम आदमी की जरूरतें और उसके जीवन के सामने जो चुनौतियां हैं, वही सबसे बड़ा मुद्दा है। कर्नाटक की जनता ने कांग्रेस को जीताकर स्पष्ट संकेत दे दिया है कि आज देश में जिस ढंग से सरकार चल रही है, वह देश को स्वीकार नहीं है।

वहीं वित्त मंत्री एवं जदयू के वरिष्ठ नेता विजय कुमार चौधरी ने कहा कि नतीजों से स्पष्ट है कि कर्नाटक की जनता भाजपा के भ्रष्ट शासन से त्रस्त थी। इसके अलावा भी अपना नाम चुनावी राजनीति में घसीटे जाने से भगवान भी नाराज होते हैं। प्रधानमंत्री स्वयं अपने चुनावी संबोधनों की शुरूआत बजरंगबली के जयकारे से करके वोटों के ध्रुवीकरण का लक्ष्य साधना चाह रहे थे। उन्होंने कहा कि भाजपा नेताओं ने तो जैसे भगवान का नाम लेने का पेटेंट ही करा लिया है। जितने क्विंटल फूलों की पंखुरियां प्रधानमंत्री ने अपने ऊपर एवं कर्नाटक की सड़कों पर लुटाईं, शायद उतनी सीटें भी नहीं मिल सकीं।

नालंदा मंडल कारा में विचाराधीन कैदी की मौत

AGENCY BIHARSHRIF

नालंदा जिले के दीपनगर मंडल कारा में शनिवार की सुबह एक विचाराधीन कैदी की मौत हो गई। बताया जाता है कि विचाराधीन कैदी राहुल कुमार पिछले 10 मई को मारपीट के केस में दीपनगर मंडल कारा लाया गया था, जिस दिन राहुल कुमार मंडल कारा आया था, उस दिन भी वह काफी जख्मी था।हालाकि राहुल कुमार का इलाज जेल मैनुअल के हिसाब से चल भी रहा था।

जेल अधीक्षक प्रभात कुमार ने फोन पर बताया कि राहुल कुमार साइको किस्म का युवक था और इसका इलाज के लिए दवाई रांची कोलकाता और दिल्ली से चल रहा था।जेल अधीक्षक ने यह भी बताया कि एक दिन पूर्व भी जेल में दूसरे कैदियों से भी कहासुनी हुई थी ,लेकिन बीच बचाव किया गया था।युवक राहुल कुमार इंजिनियरिंग का छात्र था और 2017 से मानसिक रूप से विक्षिप्त का दवा भी चल रहा था।फिलहाल दीपनगर थाना पुलिस की कस्टडी में शव को रखा गया ताकि इसका पोस्टमार्टम कराया जा सके। इस मामले में अभी तक पुलिस पदाधिकारी कुछ भी बोलने से परहेज कर रहे है।

मझौलिया थाने में पदस्थापित बीएमपी के सिपाही दशरथ राम घायल हो गये, अस्पताल में भर्ती

बंधक बनाए गए भाई-बहन को छुड़ाने गई पुलिस टीम पर हमले में सिपाही घायल, बाकियों ने भागकर बचाई जान

AGENCY BATIYA

मझौलिया थाना क्षेत्र के रामनगर बनकट गांव में शुक्रवार की रात बहन के घर आए युवक को बंधक बनाने की सूचना पर पहुंची पुलिस टीम पर ग्रामीणों ने हमला कर दिया। इस घटना में मझौलिया थाने में पदस्थापित बीएमपी के सिपाही दशरथ राम घायल हो गए। पत्थरबाजी में उनके सिर पर चोट लगी है। जख्मी सिपाही का इलाज गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हो रहा है। हमले में पुलिस थाने की जीप का शीशा भी टूट गया है।

महिला समेत 6 गिरफ्तार : मामले में पुलिस ने एक महिला सहित 6 लोगों को गिरफ्तार किया है। उनसे पूछताछ की जा रही है। काफी मशक्कत के बाद देर रात युवक को मुक्त कराया गया।

बहन की ससुराल वालों ने बनाया बंधक : साठी थाना क्षेत्र के बहुअरवा निवासी अभय गिरी ने बताया कि उसे सूचना मिली थी कि उसकी बहन के साथ बहनोई मारपीट कर रहा है। सूचना पर वह शुक्रवार की देर शाम अपने बहनोई रामनगर बनकट निवासी अर्जुन गिरी के घर पहुंचा। वहां जाने के बाद पूछताछ के दौरान उसकी बहनोई से तू-तू, मैं-मैं के बाद हाथापाई होने लगी। तब बहन के ससुराल वालों ने उसे व उसकी बहन को कमरे में बंद कर दिया।

सूचना पर पुलिस टीम उन्हें मुक्त कराने मौके पर पहुंची और दोनों को निकाल कर थाने ला रही थी। इसी दौरान आसपास के लोगों ने पुलिस टीम पर हमला कर दिया। वो लोग पुलिस की गाड़ी पर बैठी उसकी बहन को जबरन उतारने लगे। विरोध करने पर लोग पथराव करने लगे। घटना में सिपाही दशरथ मांझी का सिर फट गया।

जान बचाकर भागे पुलिस वाले : हमलावारों ने पुलिस जीप को भी नुकसान पहुंचाया। अचानक पुलिस टीम पर हमला से पुलिस जवानों ने इधर- उधर भागकर जान बचाया। घायल सिपाही को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। चिकित्सकों ने उसकी स्थिति गंभीर देख बेतिया रेफर कर दिया। करीब एक घंटे बाद में दल बल के साथ वहां पुलिस पहुंची और एक महिला सहित छह लोगों को गिरफ्तार कर लिया। थानाध्यक्ष अभय कुमार ने बताया इस पूरे मामले में एफआईआर दर्ज कार्रवाई की जा रही है।

BRIEF NEWS

बेगूसराय की बेटी ने खिलाया भाजपा का कमल

BEGUSARAI :

बेगूसराय की बेटी ने उत्तर प्रदेश नगर निकाय चुनाव में गाजियाबाद में भाजपा का कमल खिला दिया है। शनिवार को संपन्न मतगणना में बेगूसराय के पिढ़ौली (तेघड़ा) की बेटी पूनम सिंह भारद्वाज ने गाजियाबाद नगर निगम क्षेत्र वार्ड पार्षद के पद पर विजय प्राप्त किया है। उनके निर्वाचित होने की जानकारी मिलते ही बेगूसराय में भी उत्साह का माहौल है। बड़ी संख्या में लोग विभिन्न माध्यमों से उन्हें बधाई दे रही है। पूनम सिंह के मायके पिढ़ौली में जबरदस्त खुशियां मनाई गई है। उल्लेखनीय है कि तेघड़ा विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक भाजपा नेता ललन कुंवर की बहन पूनम सिंह भारद्वाज गाजियाबाद नगर निगम के प्रताप नगर वार्ड से भाजपा की प्रत्याशी थी। उन्होंने 1396 मत से स्वतंत्र प्रत्याशी वीरवति को पराजित किया।

समस्तीपुर में एक ही चिता पर हुआ मां-बेटे का अंतिम संस्कार, लोगों की आंखें हुईं नम

SAMSTIPUR : विभूतिपुर थाना क्षेत्र के सिंघिया बुजुर्ग दक्षिण पंचायत वॉर्ड-11 निवासी भरत पंडित की पत्नी सविता देवी और पुत्र दिव्यांशु कुमार की मौत रोसड़ा-समस्तीपुर मार्ग पर मुरियारो चौर के पास गुरुवार को सड़क दुर्घटना में हो गई थी। मृतक के शवों को पोस्टमॉर्टम के बाद गांव लाया गया। ये मंजर देख देख परिवार में कोहराम मच गई।

एक साथ उठी अर्थी, चिता भी साथ जली : मां-बेटे का शव देखने के लिए सैकड़ों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। शुक्रवार की सुबह एक हीं अर्थी पर मां-बेटे का शव सिंघियाघाट बूढ़ी गंडक नदी के बालू घाट पर ले जाया गया। जहां एक ही चिता पर मां-बेटे का अंतिम संस्कार किया गया। भरत पंडित ने अपनी पत्नी और पुत्र को मुखाग्नि दी। यह देख लोगों की आंखें नम हो गईं। बताया जाता है कि ऑटो और स्कॉर्पियो के बीच बीते गुरुवार को आमने-सामने जोरदार टक्कर में ऑटो चालक समेत करीब 6 लोग जख्मी हो गए थे। इसमें ऑटो चालक उपेंद्र दाहा के पुत्र मुकेश कुमार का इलाज पटना के एक निजी अस्पताल में चल रहा है। उसकी स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। वहीं मृतका सविता देवी की चचेरी बहन और अरविंद पंडित की पत्नी रिंकू देवी समेत अन्य घायलों का भी इलाज जारी है।

शादी समारोह में शामिल होने निकले थे : बताया जाता है कि जख्मी रिंकू देवी और मृतका सविता देवी दोनों चचेरी बहन थीं। दोनों की शादी सिंघिया बुजुर्ग दक्षिण वॉर्ड- 11 में महज कुछ ही दूरी पर हुई थी। बीते गुरुवार को मायके इलमासनगर में चचेरी बहन की शादी में शामिल होने सविता देवी बेटे और अपनी बहन रिंकू देवी के साथ गांव से जा रही थी। इसी दौरान हादसा हो गया। बताया जाता है कि सविता अपने पीछे 7 साल की बेटी दिव्या कुमारी को छोड़ गई है।

आगजनी में चार परिवारों के सात घर जले लाखों का नुकसान

ARARIA : फारबिसगंज के रामपुर दक्षिण वार्ड संख्या 2 इस्लाम टोला में शनिवार की दोपहर भीषण आगजनी की घटना हुई,जिसमे देखते ही देखते चार परिवारों के सात घर जल कर राख हो गए। घरों में मौजूद अनाज, कपड़े,मोटरसाइकिल, जेवर जेवरात समेत नगद राशि भी जलकर राख हो गया।आग की लपटें इतनी तेज थी कि एक मोटरसाइकिल पूरी तरह से जलकर राख हो गया। आगजनी का कारण बिजली का शॉर्ट सर्किट बताया जाता है। आगजनी की सूचना पर फायर बिग्रेड की टीम स्थानीय ग्रामीणों के मदद से घंटों मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया।आगजनी में मो. छेदी पिता मो नब्बो, ताहिर पिता मो इदरीश, अंजार पिता मो. ताहिर, जमशेद पिता मो छेदी के घर समेत सारा सामान जलकर स्वाहा हो गया। घटना में चार परिवार के सात घर जलने की बात लोगों के द्वारा बताया गया है। बताया जाता है कि पहले मो छेदी के घर में शॉर्ट सर्किट से आग लगी थी। जिसके बाद आग ने धीरे-धीरे भीषण रूप ले लिया और आग के चपेट में लगभग आधा दर्जन से अधिक घर आ गए। भीषण आग में मो छेदी के घर में मौजूद एक लाख रुपया नगद एवं मोटरसाइकल भी जल गया। पीड़ित ने बताया कि अनाज बेचकर घर में रुपया रखा था। वही मौके पर मौजूद वार्ड सदस्य हामिद अंसारी, इम्तियाज अंसारी, फिरदोश अंसारी, समीम आलम, परवेज आलम, जाहिद आलम, जाबिर आलम आदि ने कहा कि भीषण आग में सब कुछ जलकर राख हो गया बताया कि पीड़ित सभी मजदूरी का काम करते हैं। अचानक हुए हादसे से सभी को काफी ज्यादा नुकसान हुआ है। ग्रामीणों ने पीड़ितों के लिए मुआवजे की मांग की है। वही पूछे जाने पर सीओ संजीव कुमार ने कहा कि अगलगी में काफी नुकसान हुआ है। क्षतिपूर्ति का जांच का निर्देश दिया गया है। पीड़ितों को सरकारी सहायता प्रदान की जाएगी।

दो ट्रकों की आमने-सामने की टक्कर में दो लोग घायल

BHAGLPUR : जिले के जगदीशपुर थाना क्षेत्र के दुमका मुख्य मार्ग स्थित बैजानी पेट्रोल पंप के समीप शनिवार को दो ट्रकों के बीच आमने-सामने की भीषण टक्कर हो गई। जिसमें ट्रक चालक और मोटरसाइकिल सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया है। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि बाइक को बचाने में दोनों ट्रक आपस में भिड़ गए। जिसमें बाइक सवार युवक और ट्रक चालक गंभीर रूप से घायल हो गए। जिसके बाद बाईपास टीओपी थाना पुलिस को सूचित किया गया। वहीं बाईपास टीओपी थाना अध्यक्ष ओमप्रकाश ने त्वरित कार्रवाई करते हुए घटनास्थल पर पुलिस बल को भेज दिया। जिसके बाद पुलिस एवं ग्रामीणों की मदद से घायलों को इलाज के लिए मायागंज अस्पताल ले जाया गया। सड़क दुर्घटना के बाद वहां जाम की स्थिति उत्पन्न होने लगी। प्रशासन ने जाम को हटाया। जाम हटाने में प्रशासन को काफी मशक्कत करनी पड़ी।

बिहार के मुजफ्फरपुर में झोलाछाप डॉक्टर ने हर्निया के ऑपरेशन में हाइड्रोसील निकाला

PATNA : बिहार में मुजफ्फरपुर जिले के सकरा में झोलाछाप डॉक्टर ने हर्निया के ऑपरेशन के नाम पर हाइड्रोसील को ही काट कर हटा दिया। मामला मुजफ्फरपुर जिले के सकरा थाना क्षेत्र के रेलवे फाटक के निकट का है जहां एक निजी अस्पताल शिव शक्ति नर्सिंग होम में बीते 10 अप्रैल को सकरा वाजिद के रहने वाले कैलाश महतो का जबरन हर्निया का ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन के बाद मरीज की हालत बिगड़ने लगी। उसके पेट और हाइड्रोसील में सूजन आ गया। जब हालत बिगड़ने लगी तो दो दिन बाद फिर से उसी अस्पताल में ऑपरेशन किया गया, जिसमें मरीज का हाइड्रोसील भी काटकर हटा दिया गया। इसके बाद मरीज की हालत और बिगड़ने लगी, जिसके बाद परिजन दूसरा अस्पताल ले जाना चाहे लेकिन अस्पताल वाले उसे जाने नहीं दें रहें थे। फिर स्थानीय जनप्रतिनिधि के सहयोग से उसे मुजफ्फरपुर के चांदनी चौक पर स्थित चाणक्य हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया, जहां उसका पेट खोल दिया गया। इधर, सकरा वाले निजी अस्पताल के लोग फरार हो गए और पीड़ितों को लगातार डराया-धमकाया जा रहा है। मामले को लेकर मरीज के परिजनों ने बताया कि हमें डराया जा रहा था। मरीज की हालत अब भी ठीक नहीं है। मरीज कैलाश महतो जिंदगी और मौत से जूझ रहा है। कैलाश महतो ठेला पर गोलगप्पा बेचता था। उनकी दो बेटियां है, जिनकी शादी करनी है। ऐसे में गलत ऑपरेशन की वजह से पूरा परिवार बर्बाद होने की कगार पर है। मुजफ्फरपुर के सिविल सर्जन डॉ उमेशचंद्र शर्मा ने बताया कि मामले की जांच करेंगे। ऐसे फर्जी डॉक्टर और फर्जी नर्सिंग होम के खिलाफ सख्त कदम उठाएंगे।

नतीजों के इशारे

शुक्रवार का दिन परीक्षा परिणामों के नाम रहा। यूं तो देश में परीक्षाएं हमेशा चलती रहती हैं, लेकिन केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) की परीक्षाओं और परिणामों का सबको खास तौर पर इंतजार रहता है। सीबीएसई ने शुक्रवार को पहले 12वीं और फिर 10वीं के परीक्षा परिणाम घोषित कर दिए। प्रतिभाशाली बच्चों की कोई सूची चर्चा में नहीं है, तो इससे कुल मिलाकर एक राहत का एहसास है। पहले जब मेरिट लिस्ट जारी होती थी, तब फेल होने वालों का अलग हाहाकार महसूस होता था। अब अगर 10वीं और 12वीं के परीक्षा परिणाम मेरिट के आतंक से बाहर निकल आए हैं, तो यह शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक और मानवीय तरक्की का ही संकेत है। कुल मिलाकर, एक समझदारी का माहौल नजर आ रहा है। कोई भी परीक्षा अंतिम नहीं होती है, एक परीक्षा में शीर्ष पर आ जाने से कोई हमेशा के लिए सफल नहीं मान लिया जाता और न एक बार कम नंबर आने से कोई हमेशा के लिए पिछड़ जाता है। पहले के समय में 10वीं बोर्ड रिजल्ट का सर्वाधिक महत्व होता था, लेकिन अब 12वीं बोर्ड का भी खूब महत्व हो गया है। कक्षा 10वीं के परिणाम के अनुसार, 93.12 प्रतिशत छात्र सफल हुए हैं, जबकि कक्षा 12वीं में 87.33 प्रतिशत को कामयाबी हासिल हुई है। सीबीएसई 10वीं बोर्ड के तहत देश भर में परीक्षा देने के लिए पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या 21,84,117 थी, जबकि 21,65,805 ने ही परीक्षा दी और 20,16,779 विद्यार्थी पास हो गए हैं। एक बड़ा सवाल यह है कि 18,312 छात्र परीक्षा में क्यों नहीं बैठे? यह एक शैक्षणिक-सामाजिक समीक्षा का विषय है। परीक्षा से बचे या वंचित रहे छात्रों की संख्या बहुत ज्यादा है। भारत में बड़ी संख्या में छात्र पढ़ाई छोड़ देते हैं, लेकिन जब परीक्षा परिणामों की चर्चा होती है, तब इन छात्रों को हम भूल जाते हैं। स्कूलों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अधिकतम छात्र परीक्षा में बैठें और उत्तीर्ण हों। भारत जैसे देश में तमाम राज्य सरकारों के भी शिक्षा बोर्ड को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लगभग सारे योग्य विद्यार्थी कम से कम 10वीं तो पास करें। गौर करने का विषय है कि इस बार पास होने वालों का प्रतिशत घटा है। 12वीं की बात करें, तो इस वर्ष कुल उत्तीर्ण प्रतिशत 87.33 है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 5.38 प्रतिशत कम है। साल 2022 में कुल पास प्रतिशत 92.71 था। इस वर्ष 10वीं कक्षा में पास होने वालों की संख्या भी 1.28 प्रतिशत कम है। आखिर ऐसा क्यों हुआ है? हमें नहीं भूलना चाहिए कि यह कोरोना महामारी के बाद हुई पहली सामान्य पूर्ण परीक्षा थी। लगभग दो साल बाद स्कूल लौटे छात्रों का प्रदर्शन कमतर होने की आशंका पहले से ही थी। हालांकि, इस मोर्चे पर शिक्षकों को भी अपने प्रदर्शन पर जरूर गौर करना चाहिए। इस बार शिक्षा में क्षेत्रीय असमानता भी इतनी ज्यादा दिख रही है कि चिंता स्वाभाविक है। मिसाल के लिए, दक्षिण भारत में राज्यों में छात्रों का प्रदर्शन बहुत अच्छा रहा है। 12वीं बोर्ड में उच्चतम प्रदर्शन त्रिवेंद्रम क्षेत्र ने किया है, जहां 99.91 विद्यार्थी सफल रहे हैं।

दिल्ली को ताकत

दिल्ली सरकार को ज्यादा अधिकार का इंतजार था और सर्वोच्च न्यायालय के अनुकूल फैसले से बहुत हद तक उसकी मांग पूरी हुई है। कानून-व्यवस्था और जमीन को छोड़कर सेवाओं पर अब एक तरह से दिल्ली सरकार का ही अधिकार रहेगा। आश्चर्य नहीं कि आम आदमी पार्टी के प्रमुख व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सर्वोच्च न्यायालय के फैसले का स्वागत करते हुए कहा है कि न्याय करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय का आभार, इस निर्णय से राष्ट्रीय राजधानी के विकास को गति मिलेगी। चुनी हुई स्थानीय सरकार के लिए यह फैसला एक जीत की तरह है। गुरुवार को प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ ने स्पष्ट कर दिया कि सरकार के लोकतांत्रिक स्वरूप में प्रशासन की वास्तविक शक्ति चुनी गई सरकार के पास होनी चाहिए। संविधान पीठ ने बहुमत से न्यायमूर्ति अशोक भूषण के 2019 के फैसले से सहमत होने से इनकार कर दिया। न्यायमूर्ति भूषण ने दिल्ली के उप-राज्यपाल के पक्ष में फैसला देते हुए कहा था कि शहर की सरकार के पास सेवाओं के मुद्दे पर कोई शक्ति नहीं है। अब सर्वोच्च न्यायालय ने सेवाओं पर दिल्ली सरकार के अधिकार को बहाल कर दिया है। इस फैसले से सबसे बड़ा अंतर यह आएगा कि दिल्ली में तैनात अधिकारी अब केजरीवाल सरकार के प्रति जवाबदेह हो जाएंगे। अभी यहां तैनात अधिकारियों से पूरी तरह काम लेने में दिल्ली सरकार को परेशानी हो रही थी। बिना देरी किए दिल्ली के मुख्यमंत्री ने संदेश दे दिया है कि एक जिम्मेदार, जवाबदेह और संवेदनशील प्रशासन के लिए बड़ा प्रशासनिक फेरबदल होने वाला है। साथ ही, लोगों के काम में बाधा डालने वाले अधिकारियों को भी नुकसान उठाना पड़ेगा। आम आदमी पार्टी की खुशी बता रही है कि उसकी सरकार को काम करने में वाकई परेशानी हुई है। यह ठीक भी है कि अधिकारियों को चुनी गई सरकार के प्रति ही जवाबदेह होना चाहिए। वैसे ऐसा भी नहीं है कि हर अधिकारी से सरकार को परेशानी होती होगी, पर जो अधिकारी विकास कार्यों में बाधा बने होंगे, उनको तो वैसे भी सबक मिलना चाहिए। इसमें शक नहीं कि यह दिल्ली में मजबूत सरकार का दौर है, अतः यहां उप-राज्यपाल को सरकार के अनुरूप ही काम करना चाहिए।

ममता की मूरत होती है मां

ANALYSIS

रमेश सर्राफ धमोरा

अंतरराष्ट्रीय मातृत्व दिवस माताओं एवं मातृत्व का सम्मान करने वाला दिन होता है। एक मां ही होती है जो सभी की जगह ले सकती है। लेकिन उनकी जगह कोई और नहीं ले सकता है। मां अपने बच्चों की हर प्रकार से रक्षा और उनकी देखभाल करती है। इसलिए मां को ईश्वर का दूसरा रूप कहा जाता है। मां वह शख्स होती है जो नौ माह तक अपने बच्चे को कोख में पालती है। कुछ भी हो जाए लेकिन एक मां का अपने बच्चों के प्रति स्नेह कभी कम नहीं होता है। वह खुद से भी ज्यादा अपने बच्चों के सुख सुविधाओं को लेकर चिंतित रहती है। मां अपनी संतान की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी विपत्तियों का सामना करने का साहस रखती है। मां होने का अर्थ है उत्तरदायित्व और निस्वार्थता से पूरी तरह से अभिभूत होना। मातृत्व का मतलब है रातों की नींद हराम करना। मां भगवान की सबसे श्रेष्ठ रचना है। उसके जितना त्याग और प्यार कोई नहीं कर सकता है। मां विश्व की जननी है उसके बिना संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

इस साल 14 मई को मातृत्व दिवस (मदर्स डे) है। यह दिवस मां को समर्पित होता है। यहां मां को नमन करने का दिवस है। मां एक ऐसा शब्द है जिसमें पूरा ब्रह्माण्ड समा जाए। जब हम मां बोलने के लिए मुंह खोलते हैं तो शब्द के उच्चारण के साथ ही पूरा मुंह भर जाता है। मां ममता की मूरत होती है। पूरी दुनिया के सभी धर्मों ने मां के रिश्ते को सबसे पवित्र माना गया है। अपने बच्चों के प्रति मां का प्यार, दुलार, समर्पण और त्याग अनमोल होता है। मां को सम्मान देने के लिए पूरी दुनिया में मई के दूसरे रविवार को मातृत्व दिवस के रूप में मनाया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय मातृत्व दिवस माताओं एवं मातृत्व का सम्मान करने वाला दिन होता है। एक मां ही होती है जो सभी की जगह ले सकती है। लेकिन उनकी जगह कोई और नहीं ले सकता है। मां अपने बच्चों की हर प्रकार से रक्षा और उनकी देखभाल करती है। इसलिए मां को ईश्वर का दूसरा रूप कहा जाता है। मां वह शख्स होती है जो नौ माह तक अपने बच्चे को कोख में पालती है। कुछ भी हो जाए लेकिन एक मां का अपने बच्चों के प्रति स्नेह कभी कम नहीं होता है। वह खुद से भी ज्यादा अपने बच्चों के सुख सुविधाओं को लेकर चिंतित रहती है। मां अपनी संतान की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी विपत्तियों का सामना करने का साहस रखती है।

मां होने का अर्थ है उत्तरदायित्व और निस्वार्थता से पूरी तरह से अभिभूत होना। मातृत्व का मतलब है रातों की नींद हराम करना। मां भगवान की सबसे श्रेष्ठ रचना है। उसके जितना त्याग और प्यार कोई नहीं कर सकता है। मां विश्व की जननी है उसके बिना संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। मां ही हमारी सबसे पहली गुरु होती है। इसीलिए हम धरती को भी धरती माता कहते हैं। जो अपने ऊपर हम सब का वजन उठाती है।

हमारे देश में गाय को भी माता कह कर पुकारते हैं जो हमें अपने अपना दूध पिला कर बड़ा करती है। मां हमारे जीवन की सबसे प्रमुख हस्ती होती है जो बिना कुछ पाने की उम्मीद किए सिर्फ देती ही रहती है। मां का प्यार निस्वार्थ होता है जो हम अपने पूरे जीवन में किसी और से प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

देखा जाए तो मातृ दिवस का इतिहास सदियों पुराना है। यूनान में परमेश्वर की मां को सम्मानित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता था। 16वीं सदी में इंग्लैंड का ईसाई समुदाय ईशु की मां मदर मेरी को सम्मानित करने के लिए इस दिवस को त्योहार के रूप में मनाये जाने की शुरूआत हुई। मदर्स डे मनाने का मूल कारण समस्त माताओं को सम्मान देना और एक शिशु के उत्थान में उसकी महान भूमिका को सलाम करना है।

मातृत्व दिवस को आधिकारिक बनाने का निर्णय पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति वूडरो विलसन ने आठ मई 1914 को लिया था। वुडरो विल्सन ने मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाने और मां के सम्मान में एक दिन के अवकाश की सार्वजनिक घोषणा की थी। वे समझ रहे थे कि सम्मान, श्रद्धा के साथ माताओं का सशक्तिकरण होना चाहिए, जिससे मातृत्व शक्ति के प्रभाव से युद्धों की विभीषिका रुके। तत्पश्चात हर वर्ष मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाया जाता है। वर्तमान में ये भारत के साथ यूके, चीन, यूएस, मेक्सिको, डेनमार्क, इटली, फिनलैण्ड, तुर्की, ऑस्ट्रेलिया, कैनेडा, जापान, बेल्जियम सहित कई देशों में मनाया जाता है। हिंदू धर्म में मां शब्द की कई व्याख्याएं हैं। वाल्मीकि रामायण में भगवान राम ने कहा है कि ह्लजननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसिह्व। इसका मतलब है कि मां और मातृभूमि स्वर्ग से बेहतर हैं। मां शब्द की उत्पत्ति और अर्थ के बारे में कई मत हैं। विभिन्न शैलियों ने मां शब्द की व्याख्या की है। ये एक अक्षर वाला मां संबोधन पूरे ब्रह्मांड में सबसे ताकतवर शब्द माना जाता है। मां सिर्फ शब्द नहीं बल्कि एक भावना है। इसका वर्णन शब्दों में करना नामुमकिन है। मां वो है जो न सिर्फ हमे जन्म देती है बल्कि हमें जीना भी सिखाती है। मां वो होती है जो खुद भूखी सो जाए पर अपने बच्चों को भूखा रहने नहीं देती। उसे खुद कितनी भी तकलीफ हो वो जताती नहीं और ऐसे में भी सिर्फ अपने बच्चों की ही सलामती की दुआ करती है। मां की ममता समुद्र से भी गहरी है।

दुनिया में हर शब्द का अर्थ समझा और समझाया जा सकता है। लेकिन मां शब्द का अर्थ समझना और समझाना दोनों ही लगभग नामुमकिन है। मां शब्द का अर्थ समझाना इसलिए नामुमकिन है क्योंकि मां के प्यार को, मां के बलिदान को शब्दों में नहीं समझाया जा सकता। इसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। मां के दिल में जितना प्यार अपने बच्चों के लिए होता है। अगर मां के सभी बच्चे कोशिश भी करें तो उसका कुछ अंश भी अदा नहीं कर सकते।

मां को संस्कृत में मातर कहते हैं। मां ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति है जिसके माध्यम से परमेश्वर अपने अंश द्वारा अपनी शक्ति का संचार और विस्तार करता है। पुराणों के अनुसार मां का अर्थ लक्ष्मी है। जिस प्रकार मां लक्ष्मी सृष्टि का पालन करती है उसी प्रकार मां भी शिशु का पालन करती है। इस प्रकार मां को लक्ष्मी का स्वरूप माना गया। एक मत यह है कि इस सृष्टि का आरंभ मनु और शतरूपा नामक स्त्री-पुरुष के समागम से हुआ। मनु के नाम पर ही उनकी संतान को मनुज या मानव कहा गया। मनु की संतान को जिसने जन्म दिया उसे मां कहा गया। और इस प्रकार मां शब्द की उत्पत्ति हुई। भारतीय संस्कृति तथा कुछ ग्रंथों के अनुसार मां शब्द की उत्पत्ति गोवंश से हुई। गाय का बछड़ा जब जन्म लेता है तो उसके सर्वप्रथम रंभाने में जो स्वर निकालता है वह मां होता है। यानी कि बछड़ा अपनी जन्मदात्री को मां के नाम से पुकारता है। इस प्रकार जन्म देने वाली को मां कहकर पुकारा जाने लगा।

(लेखक, हिन्दुस्थान समाचार से संबद्ध हैं।)

इंग्लिश विंग्लिश और श्रीदेवी की दूसरी पारी

हिंदी दर्शकों की चहेती रूप की रानी श्रीदेवी ने तीन लम्बे दशक (1967-97) तक कैमरे के सामने रहने के बाद ऋषि कपूर के साथ कौन सच्चा कौन झूठा की रिलीज के बाद ब्रेक ले लिया था। तब बोनी कपूर के साथ शादी करके वे गर्भवती भी थीं। आज यह यकीन करना जरा मुश्किल है कि श्रीदेवी जैसी एक्ट्रेस, जिसने चार साल की उम्र से ही कैमरे से दोस्ती कर ली थी, फिल्मों से इतना लम्बा ब्रेक लेंगी। पन्द्रह साल लम्बा...। इस बीच श्रीदेवी ने अपने आप को पेरेन्ट्स टीचर्स मीटिंग और अपनी दोनों बेटियों की अच्छी परवरिश करने में पूरी तरह व्यस्त कर लिया। ऐसा नहीं कि इस बीच श्रीदेवी को मिलने वाले वापसी के ऑफरों में कोई कमी आई हो। मिसाल के तौर पर सुभाष घई से मिलने वाला एक ऑफर, जिसमें वे यादें (2001) फिल्म में जैकी श्रॉफ के साथ श्रीदेवी को एक छोटा सा कैरेक्टर रोल देना चाहते थे। इसे श्रीदेवी के मना करने पर रति अग्निहोत्री ने किया। बी.आर. चोपड़ा श्रीदेवी को अमिताभ बच्चन के साथ बागबान (2003) के लिए साइन करना चाहते थे, लेकिन श्रीदेवी को नहीं लगा कि ये फिल्म उनकी वापसी के लिए सही फिल्म है। उनकी जगह हेमा मालिनी को साइन कर लिया गया। वे एक और फिल्म अपने ही प्रोडक्शन के लिए करते-करते रह गईं। शक्ति (2002) नाम की ये फिल्म उनके दुबारा गर्भवती होने की वजह से करिश्मा कपूर को मिली। इस बीच वापसी के लिए श्रीदेवी ने टीवी पर मालिनी अय्यर (2004) नाम के एक सीरिज के साथ शुरूआत की। इस शो को बोनी कपूर प्रोड्यूस कर रहे थे, जिसमें श्रीदेवी एक पंजाबी पति (महेश ठाकुर) की दक्षिण भारतीय पत्नी बनी थी। दंपति के पंजाब आकर रहने की यह कहानी दर्शकों को बिल्कुल भी रास नहीं आई। अभिनेत्रियों की वापसी हमेशा से मुश्किल रही है। माधुरी दीक्षित ने 2007 में आजा नचले के साथ वापसी की, लेकिन फिल्म बुरी तरह फ्लॉप रही। जूही चावला, करिश्मा कपूर, काजोल और ऐश्वर्या राय सभी हीरोइनों को वापसी के लिए संघर्ष करना पड़ा है। इसलिए शायद श्रीदेवी की वापसी का इकलौता रास्ता एक्टिंग के दम पर, किसी दमदार रोल के दम पर ही संभव था। दर्शक उन्हें स्टार के तौर पर शायद तभी स्वीकार कर सकते थे। जब इंग्लिश विंग्लिश रिलीज हुई तो लगा कि जैसे ये रोल श्रीदेवी के लिए ही बना था। फिल्म में श्रीदेवी ने शशि गोडबोले नाम की एक महाराष्ट्र की महिला का किरदार निभाया, जिसे अंग्रेजी बोलने में दिक्कत आती है। एक ऐसी औरत की कहानी, जिसका डर ये है कि वो एक ऐसी भाषा नहीं बोल पाती जिसे 'कूल' समझा जाता है। फिल्म में कई ऐसे लम्हे थे जो दर्शकों को अपने से लगें। श्रीदेवी ने इस रोल को नई ऊंचाई दे डाली। भीड़ में खो जाने और गलत समझ लिए जाने वाले ये अहसास सबके जाने-पहचाने थे। फिल्म के आखिर में अपनी भांजी की शादी में दिए गये छोटे से भाषण के साथ वे दर्शकों के दिमाग में अटक कर रह गईं। फिल्म की सफलता से यह सिद्ध हुआ कि पन्द्रह साल के बाद भी श्रीदेवी में अपने कन्धों पर किसी फिल्म को खींच ले जाने का माद्दा था। फिल्म को जितना आलोचकों ने पसन्द किया, उतना ही दर्शकों ने। ये फिल्म हिन्दुस्तान के बढ़ते मिडल क्लास को भी खूब पसन्द आई , जो अभी भी अंग्रेजी को सामाजिक पायदान पर ऊपर चढ़ने का जरिया मानता है। देश-विदेश में भी ये फिल्म खूब सराही गई। इंग्लिश विंग्लिश सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म की श्रेणी में अकादमी अवॉर्ड के लिए भारत की ओर से आधिकारिक रूप से नामांकित की गई। उनतालीस साल की अभिनेत्री के लिए इससे शानदार वापसी और क्या होती। काश वे हमारे बीच और लंबे समय तक रही होती...। श्रीदेवी के लिए बॉलीवुड में प्रवेश उनकी अम्मा राजेश्वरी की निरन्तर कोशिशों का ही नतीजा था। राजेश्वरी अपनी जवानी में अदाकारा बनने के सपने देखा करती थी, और इसलिए आन्ध्र प्रदेश के छोटे से शहर तिरुपति से मद्रास चली आई थीं। राजेश्वरी ने छोटी-मोटी भूमिकाएं ही कीं, लेकिन उनकी महत्वाकांक्षा कभी खत्म नहीं हुई। राजेश्वरी के पहले पति ने जब उन्हें छोड़ दिया तो तलाक की बात करने के सिलसिले में उनकी मुलाकात अय्यपन नाम के एक वकील से हुई जिनकी मद्रास में अच्छी प्रैक्टिस चला करती थी। अय्यपन खुद शादीशुदा थे, और उनके दो बेटे भी थे।

Social Media Corner

सच के हक में...

'फूट डालो-राज करो' राजनीति की उल्टी गिनती शुरू हो चुकी है। कर्नाटक विधानसभा चुनाव जीतने पर कर्नाटक की जनता और कांग्रेस पार्टी को हार्दिक बधाई, शुभकामनाएं एवं जोहार।

(सीएम हेमंत सोरेन के ट्विटर अकाउंट से)

भ्रष्टाचार पर केंद्र सरकार जीरो टॉलरेंस की नीति पर चल रही है। एनसीबी अधिकारी समीर वानखड़े हों या WAPCOS के पूर्व सीएमडी राजिंद्र कुमार गुप्ता सभी के खिलाफ सीबीआई ने करवाई की। भ्रष्टाचार किसी का हो बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। दूसरी तरफ झारखंड जैसे राज्यों की सरकार हैं जो भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे पूजा सिंघल सरीखे अफसरों पर भी ईडी के दर्जनों पत्र के बाद मुकदमा नहीं कर रही। छवि रंजन, वीरेंद्र राम जैसे दागियों को मालदार पोस्टिंग देकर उनका रिंग मास्टर अमित अग्रवाल, प्रेम प्रकाश जैसे लोगों को बना दिया गया। अब जब राज्य की एजेंसियां हाथ पर हाथ धरे रहेंगी तो केंद्रीय एजेंसियों को तो सफाई का काम करना ही होगा न।

(पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी के ट्विटर अकाउंट से)

अपने ही प्रधानमंत्रियों का दुश्मन पाक

पाकिस्तान में पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी पर हैरान होने की जरूरत नहीं है। हालांकि वह रिहा हो चुके हैं। पाकिस्तान में इमरान से पहले भी कई प्रधानमंत्रियों को जेल की हवा खानी पड़ी है। सबसे पहले 1960 में सैनिक तानाशाह अयूब खान ने प्रधानमंत्री हुसैन शहीद सुहरावर्दी को जेल भेजा था। सुहारावर्दी देश के विभाजन से पहले बंगाल राज्य के प्रधानमंत्री थे। तब किसी राज्य के मुखिया को प्रधानमंत्री ही कहा जाता था। जब 1946 में जिन्ना के डायरेक्ट एक्शन के आह्वान के बाद कोलकाता में हिंसा भड़की तब सुहारावर्दी ही बंगाल के प्रधानमंत्री थे। कहते हैं कि उन्होंने हिन्दुओं के खिलाफ हिंसा को रुकवाने की कोई चेष्टा नहीं की थी। हिंसा को हवा जरूर दी। खैर, उनके बाद जुल्फिकार भुट्टो को जालंधर में पैदा हुए जिया उल हक ने जेल भेजा। उसके बाद भुट्टो को फांसी भी हुई। भुट्टो के बाद उनकी बेटी बेनजीर भुट्टो को भी जेल जाना पड़ा। फिर उनकी हत्या भी हुई। नवाज शरीफ और शाहिद अब्बासी ने भी प्रधानमंत्री के रूप में जेल की सलाखों के पीछे वक्त बिताया है। यही पाकिस्तान का चरित्र है। वहां पर निर्वाचित प्रधानमंत्रियों को पद से हटाने और गिरफ्तारकिये जाने की परंपरा पुरानी है। हां, इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद पाकिस्तान जिस तरह से जलने लगा है, उस तरह के हालात पहले कभी देखने में नहीं आये। इस लिहाज से इमरान खान की गिरफ्तारी थोड़ी अलग जरूर है। इमरान खान को करप्शन के आरोपों में जेल में डालने के कारण पाकिस्तान जलने लगा है। सारे देश का गुस्सा इमरान खान के सियासी शत्रुओं से ज्यादा सेना पर है। अवाम का कहना है कि पाकिस्तान को कभी पटरी पर आने ही नहीं दिया सेना ने। उसने देश में जम्हूरियत की जड़ों को मजबूत नहीं होने दिया। यह पाकिस्तान की जनता की सोच में बहुत बड़े बदलाव का संकेत भी है। एक दौर में पाकिस्तान की अवाम अपनी सेना के लिए जां निसार करती थी। पर अब उसे जन्नत की हकीकत समझ आने लगी है। उसके सामने सच्चाई आ गई है। उसे पता चल गया है कि सेना के पूर्वी पाकिस्तान में कत्लेआम के कारण पूर्वी पाकिस्तान बांग्लादेश बना। उसे समझ आ गया है कि सेना ने अकारण भारत पर 1965 और फिर 1971 में हमले किए और फिर मुंह की खाई। पाकिस्तान ने पिछले साल देखा था जब इमरान खान की सरकार को रावलपिंडी में बैठे जनरलों ने, करप्ट पाकिस्तानी मुस्लिम लीग, पाकिस्तान पीपल्स पार्टी और कुछ छोटे राजनीतिक दलों को एक मंच में लाकर गिरवाया था। अब इमरान खान की गिरफ्तारी और वहां पर कठपुतली सरकार की गलत नीतियों के कारण महंगाई से बेहाल नाराज जनता सड़कों पर आ गई है। जनता ने सेना के दफ्तरों से लेकर सेना के आला अफसरों के बंगलों को आग के हवाले कर दिया है। यह तो एक दिन होना ही था। पाप का घड़ा फूटना ही था। प्रधानमंत्रियों की गिरफ्तारी से हटकर बात करें तो पाकिस्तान सेना ने बार-बार निर्वाचित सरकारों को गिराया है। अयूब खान, याहया खान, जिया उल हक और परवेज मुशर्रफ के समय पाकिस्तान में लोकतंत्र कराहता रहा। पाकिस्तान की सेना ने देश के विश्व मानचित्र में सामने आने के बाद अहम राजनीतिक संस्थाओं पर भी प्रभाव बढ़ाना शुरू कर दिया। अयूब खान पर तो आरोप थे कि उन्होंने मोहम्मद अली जिन्ना की बहन फातिमा जिन्ना को ही मरवा दिया था। जिया उल हक ने पाकिस्तान को घोर कठमुल्ला मुल्क भी बनवाया। पाकिस्तान का शिक्षित समाज उन्हें इसके लिये कोसता है। हालांकि उनकी विमान हादसे में मौत में भी सेना का ही हाथ बताया जाता है। सेना को ही लियाकत अली खान और बेनजीर भुट्टो के कत्ल का भी जिम्मेदार माना जाता है।

I WANT TO SAY...

THE PHOTON NEWS

सेब का नाम सुनते ही हिमाचल प्रदेश और कश्मीर को नाम जेहन में उभर आता है। इन राज्यों में भ्रमण करने जानेवालों की भी एक चाहत रहती है कि सेब के बाग को देखें। इस कल्पना साकार होते ही मन खुश हो जाता है। लेकिन कल्पना कीजिए कि अपने ही प्रदेश में साक्षात सेब के बाग दिखें, इसका उत्पादन हो तो कितना अच्छा लगे। ऐसा संभव हो भी रहा है। बिरसा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी ने इसकी पहल की है। इस यूनिवर्सिटी के कुलपति डा. ओंकार नाथ सिंह की पहल पर फरवरी 2022 में बीएयू के बायोडायवर्सिटी पार्क एवं उद्यान विभाग में गर्म जलवायु में उपयुक्त सेब पर अनुसंधान कार्य आरंभ किया गया। दोनों स्थानों पर अनुसंधान के लिए सेब के चार प्रभेदों के कुल 140 पौधे को पायलट ट्रायल के रूप में लगाए गए थे। बीएयू के बायोडायवर्सिटी पार्क एवं उद्यान विभाग के फार्म में सेब की कई किस्में लगाई गईं। आरंभिक तौर पर 140 पौधे लगाए गए थे। करीब 90 प्रतिशत पौधों का विकास काफी अच्छा है। मात्र एक वर्ष दो महीनों में ही पौधे का काफी अच्छा विकास देखने को मिल रहा है। इन्हें वाइएस परमार वानिकी एवं उद्यान विश्वविद्यालय नवनी, सोलन, हिमाचल प्रदेश से मंगाया गया था। सिर्फ 14 माह में ही पौधों के विकास, पौधे पर फूल एवं फल लगने लगे हैं। यह काफी सुखद है। कृषि वैज्ञानिक भी काफी आशान्वित हैं। गर्म जलवायु में उपयुक्त सेब प्रभेदों के पौधे के विकास को उत्साहवर्द्धक बताया जा रहा है। उम्मीद जताई जा रही है कि पांच वर्षों के बाद ये पौधे बढ़िया फल देने योग्य हो पाएंगे। अंतिम परिणाम सफल रहे तो निश्चित रूप से यह झारखंड के लिए वरदान साबित होगा।

हंजला दानिश खान, कडरू रांची।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PRIVATE LIMITED, Kathitand, Near Tender Bagicha, P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, Jharkhand-835222, and Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001.Editor-Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

आज केकेआर को हराकर प्लेऑफ में जगह बनाने उतरेगी सीएसके

– अंतिम चार के लिए केकेआर को दोनों ही मैंच जीतना होगा

चेन्नई (एजेंसी)। चार बार की चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) की टीम रविवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) का सामना करेगी। तब धोनी की टीम का लक्ष्य प्लेऑफ में पहुंचने की अपनी उम्मीदों को मजबूत करना होगा। सुपर किंग्स के अभी 12 मैचों में 15 अंक हैं, और वह प्लेऑफ में जगह बनाने की अच्छी स्थिति में है। दूसरी ओर केकेआर के केवल 10 अंक हैं, इसकारण केकेआर को अपने बाकी बचे दोनों मैच जीतने के साथ बाकी टीमों के परिणाम भी अपने अनुकूल रहने की प्रार्थना करनी होगी। धोनी की अगुवाई वाली टीम पिछले दो मैचों में जीत दर्ज करके इस मैच में उतरेगी। इस टीम को अपने घरेलू मैदान पर हराना आसान नहीं होगा। धोनी के दो छक्के ही चेपॉक स्टेडियम में मौजूद दर्शकों के जश्न मनाने के लिए पर्याप्त हैं, जैसा कि उन्होंने दिल्ली के खिलाफ मैच में किया था जो कि आखिर में महत्वपूर्ण साबित हुए थे। सीएसके की बल्लेबाजी काफी मजबूत है।

सीएसके के लिए न्यूजीलैंड के सलामी बल्लेबाज डेवोन कॉनवे और रुतुराज गायकवाड टीम को अच्छी शुरुआत दे रहे हैं, जबकि उसके बाद अजिंक्य रहाणे और शिवम दुबे अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभा रहे हैं। मोईन अली, जडेजा और अंबाती रायुडु जैसे बल्लेबाज अभी तक अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर सके हैं, लेकिन सीएसके ने इस कमी को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। गेंदबाजी में श्रीलंकाई गेंदबाज मथीशा पथिराना टीम के लिए तुरुप का इक्का साबित हो रहे हैं। तुषार देशपांडे भले ही महंगे साबित हुए हैं, लेकिन उन्होंने विकेट लेने में कोताही नहीं बरती है। स्पिन विभाग में जडेजा, मोईन और महेश तीक्ष्णा अच्छी भूमिका निभा रहे हैं। इस मैच में केकेआर की संभावना उसके स्पिनरों के प्रदर्शन पर टिकी रहेगी।

वरुण चक्रवर्ती और सुयश शर्मा रविवार

को कैसा प्रदर्शन करते हैं, इस पर मैच का परिणाम तय होगा है। अनुभवी सुनील नारायण इस सत्र में अभी तक नाकाम रहे हैं और वह यहां वापसी करने की कोशिश करने वाले हैं। बल्लेबाजी में कप्तान नितीश राणा और वेंकटेश अय्यर अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन केकेआर को अपने सलामी बल्लेबाजों से अच्छी शुरुआत की उम्मीद रहेगी। केकेआर के बल्लेबाजों को हालांकि पथिराना के यॉर्कर और धीमी गेंदों तथा जडेजा की चतुराई भरी गेंदबाजी से सतर्क रहना होगा।

दोनो ही टीमें इस प्रकार हैं-

चेन्नई सुपर किंग्स: एमएस धोनी (कप्तान एवं विकेटकीपर), आकाश सिंह, मोइन अली, भगत वर्मा, दीपक चाहर, डेवोन कॉनवे, तुषार देशपांडे, शिवम दुबे, रुतुराज गायकवाड़, राजवर्धन हैंगरगेकर, रवींद्र जडेजा, सिसंडा मगाला, अजय मंडल, मथीशा पथिराना , ड्वेन प्रीटोरियस, अजिंक्य रहाणे, शैक रशीद, अंबाती रायडू, मिचेल सेंटनर, सुभ्रांशु सेनापति, सिमरजीत सिंह, निशांत सिंधु, प्रशांत सोलंकी, बेन स्टोक्स, महेश तीक्ष्णा।

कोलकाता नाइट राइडर्स: नीतीश राणा (कप्तान), रहमानुल्लाह गुरबाज, जेसन रॉय, वेंकटेश अय्यर, आंद्रे रसेल, सुनील नारायण, शार्दुल ठाकुर, लॉकी फर्ग्यूसन, उमेश यादव, टिम साउदी, हर्षित राणा, वरुण चक्रवर्ती, अनुकुल रॉय, रिंकू सिंह, एन जगदीसन, वैभव अरोड़ा, सुयश शर्मा, डेविड वीज, कुलवंत खेजरोलिया, मनदीप सिंह, आर्या देसाई और जॉनसन चार्ल्स।

आईओए ने भारतीय कुश्ती संघ के सभी अधिकारियों पर प्रतिबंध लगाया

–राष्ट्रीय महासंघ के चुनाव करने तदर्थ समिति नियुक्त की

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) ने फैसला लेकर भारतीय कुश्ती संघ के सभी अधिकारियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। भारतीय ओलंपिक संघ के भारतीय कुश्ती महासंघ के सभी अधिकारियों को प्रतिबंधित कर दिया है। यानी अब महासंघ का कोई अधिकारी महासंघ के प्रशासनिक कार्य में हिस्सा नहीं ले सकेगा। इस संबंध में भारतीय ओलंपिक संघ ने एक ऑर्डर भी जारी किया है।

ऑर्डर के द्वारा ये सुनिश्चित किया जाएगा कि महासंघ के अधिकारी किसी तरह के काम का संचालन ना करें। डब्ल्यूएफआई ने कहा कि उस आईओए के आदेशों का पालन करने में कोई समस्या नहीं है क्योंकि वह पहले ही अधिकारियों के साथ सहयोग कर रहे हैं। आईओए ने डब्ल्यूएफआई के दैनिक कार्यों के संचालन तथा इस राष्ट्रीय महासंघ के चुनाव को संपन्न करवाने के लिए तदर्थ समिति नियुक्त की है। यह तदर्थ समिति खेल मंत्रालय के आदेश पर नियुक्त की गई है।

गौरतलब है कि देश के चोटी के पहलवानों ने डब्ल्यूएफआई के प्रमुख बृजभूषण शरण सिंह पर महिला पहलवानों के यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया है। विनेश फोगाट, बजरंग पुनिया, साक्षी मलिक जैसे पदक विजेता पहलानों के नेतृत्व में पहलवानों का प्रदर्शन और धरना जंतर मंतर पर जारी है। पहलवान शरण सिंह की गिरफ्तारी को लेकर जंतर मंतर पर धरना प्रदर्शन कर रहे हैं।

आईओए ने कहा कि डब्ल्यूएफआई की सभी प्रशासनिक, वित्तीय और नियामकीय भूमिकाएं अब तदर्थ समिति निभाएगी। पत्र में कहा गया है,उपरोक्त (आईओए के 12 मई, 2023 के आदेश) के संदर्भ में यह स्पष्ट किया जाता है कि कुश्ती के संचालन के लिए आईओए द्वारा नियुक्त तदर्थ समिति राष्ट्रीय खेल महासंघ के सभी कामकाज और जिम्मेदारियों को निभाएगी। इसमें कहा गया है,'' अब जबकि तदर्थ समिति अस्तित्व में है, तब डब्ल्यूएफआई के निवर्तमान पदाधिकारियों की इस महासंघ से जुड़े किसी भी तरह के कामकाज में कोई भूमिका नहीं होगी।'' इसमें कहा गया है कि निवर्तमान पदाधिकारियों को तुरंत ही महासंघ से जुड़े सारे दस्तावेज तदर्थ समिति को सौंप देने चाहिए।

डब्ल्यूएफआई के महासचिव वीएन प्रसूद ने कहा कि उन्हें आईओए पैनल के साथ संबंधित दस्तावेजों को साझा करने में कोई आपत्ति नहीं है। प्रसूद ने कहा,'' यह आम प्रक्रिया है। जब निगरानी समिति गठित की गई थी तब भी हमने उन्हें सभी आवश्यक फाइलें सौंप दी थी। अब तदर्थ समिति है और डब्ल्यूएफआई के संचालन के लिए उन्हें जो भी दस्तावेज चाहिए हम उन्हें मुहैया कराएंगे। उन्होंने कहा, यह कोई मुद्दा नहीं है। हमारा कार्यकाल पहले ही समाप्त हो चुका है तथा आईओए और सरकार इसका कामकाज देख रहे हैं। इन दस्तावेजों को मांगना सामान्य प्रक्रिया है।

वनडे विश्व कप से पहले पाकिस्तानी क्रिकेट टीम के मुख्य कोच बने ग्रांट ब्रैडबर्न

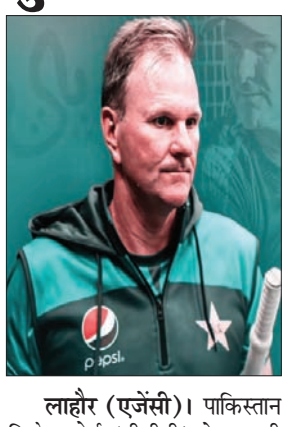

लाहौर (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने आगामी वनडे विश्व कप से पहले शनिवार को ग्रांट ब्रैडबर्न को पाकिस्तान पुरुष क्रिकेट टीम का मुख्य कोच बनाया गया। ब्रैडबर्न को दो साल का अनुबंध दिया गया है। इसके पहले उन्हें न्यूजीलैंड के खिलाफ पाकिस्तान की घरेलू सीरीज के लिए अप्रैल में अंतरिम कोच नियुक्त किया गया था। पाकिस्तान ने न्यूजीलैंड के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय और एकदिवसीय दोनों सीरीज जीती थीं।

पिछले माह, पीसीबी ने कहा था कि वह सात मई को समाप्त हो चुकी न्यूजीलैंड सीरीज के अंत में कोच नियुक्त कर लेगा। बोर्ड ने एंड्रयू पुटिक को बल्लेबाजी कोच नामित किया, जबकि उमर गुल को गेंदबाजी कोच और अब्दुल रहमान को ब्रैडबर्न के सहायक कोच के रूप में नियुक्त किया गया। ब्रैडबर्न इसके पहले 2018 में पाकिस्तान के फील्डिंग कोच रह चुके हैं। उन्होंने टीम के उच्च-प्रदर्शन प्रमुख के रूप में भी काम किया है।

पीसीबी से जारी बयान में ब्रैडबर्न ने कहा, मुख्य कोच के रूप में पाकिस्तान जैसी बेहद प्रतिभाशाली और कुशल टीम के साथ काम करना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है। हम अपने खेल को आगे बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं और अपने बढ़ते कौशल का प्रदर्शन करने के लिए उत्सुक हैं।

मुंबई की जीत से हिल गई पूरी अंक तालिका, राजस्थान को हुआ नुकसान

– तीसरे से चौथे स्थान पर पहुंचा

मुंबई(एजेंसी)। आईपीएल 2023 के 57वें मैच में मुंबई इंडियंस ने गुजरात टाइटंस के खिलाफ 29 रनों से शानदार जीत दर्ज की। मुंबई ने पहले बल्लेबाजी कर सूर्यकुमार यादव के नाबाद 103 रनों की मदद से 5 विकेट खोकर 218 रन बनाए थे। वहीं गुजरात की टीम 191 रन ही बना सकी। मुंबई की इस जीत से अंक तालिका हिल चुकी है। जहां मुंबई अब 12 मैचों में 14 अंक के साथ तीसरे स्थान पर है, वहीं राजस्थान रॉयल्स को नुकसान पहुंचा है।

दरअसल, राजस्थान रॉयल्स फिर से चौथे नंबर पर खिसक गई है। टॉप-4 टीमों पर नजर डालें तब गुजरात टाइटंस, चेन्नई सुपर किंग्स, मुंबई और राजस्थान के सभी के 12-12 मैच हो चुके हैं। गुजरात 16 अंकों के साथ पहले, चेन्नई 15 अंक के साथ दूसरे और मुंबई 14 अंक के साथ तीसरे स्थान पर आ चुकी है। वहीं राजस्थान 12 मैचों में 12 अंक के साथ नंबर 4 पर बनी हुई है। इन सभी टीमों के अब सिर्फ 2-2 मैच बचे हैं।

57 मैचों तक ऐसी है अंक तालिका

गुजरात – मैच 12, जीते 8, हारे 4, अंक 16, नेट रन रेट +0.761
चेन्नई – मैच 12, जीते 7, हारे 4, अंक 15, नेट रन रेट +0.493
मुंबई – मैच 12, जीते 7, हारे 5, अंक 14, नेट रन रेट -0.117
राजस्थान – मैच 12, जीते 6, हारे 6, अंक 12, नेट रन रेट +0.633
लखनऊ – मैच 11, जीते 5, हारे 5, अंक 11, नेट रन रेट +0.294
आरसीबी – मैच 11, जीते 5, हारे 6, अंक 10, नेट रन रेट -0.345
केकेआर – मैच 12, जीते 5, हारे 7, अंक 10, नेट रन रेट -0.357
पंजाब – मैच 11, जीते 5, हारे 6, अंक 10, नेट रन रेट -0.441
हैदराबाद – मैच 10, जीते 4, हारे 6, अंक 8, नेट रन रेट -0.472
दिल्ली – मैच 11, जीते 4, हारे 7, अंक 8, नेट रन रेट -0.605

नजमुल हसन और रहीम की जुगलबंदी से हरा आयरलैंड

चेम्सफोर्ड । नजमुल हसन शंटो के शतक के बाद अनुभवी मुश्फिकर रहीम के अंतिम क्षणों के प्रयास से बांग्लादेश ने आखिरी ओवर तक खींचे दूसरे एकदिवसीय मैच में आयरलैंड पर तीन विकेट से रोमांचक जीत दर्ज की। बारिश के कारण मैच देर से शुरू हुआ और इसकारण 45 ओवर का किया गया। आयरलैंड ने पहले बल्लेबाजी कर हैरी टेक्टर के 140 रन और जॉर्ज डॉकरेल के नाबाद 74 रन की मदद से छह विकेट पर 319 रन बनाए। बड़े लक्ष्य के सामने नजमुल ने 117 रन की पारी खेलकर बांग्लादेश को ठोस शुरुआत दी। जब बांग्लादेश को अंतिम चार गेंदों पर चार रन की जरूरत थी तब रहीम (नाबाद 36) ने चौका लगातार टीम को जीत दिलाई। बांग्लादेश की तरफ से तौहीद हृदय ने भी 68 रन का उपयोगी योगदान दिया। बांग्लादेश ने 44.3 ओवर में सात विकेट पर 320 रन बनाए। इन दोनों टीमों के बीच पहला वनडे मैच बारिश की भेंट चढ़ गया था। इस तरह से बांग्लादेश तीन मैचों की श्रृंखला में 1-0 से आगे हो गया है। तीसरा और अंतिम मैच रविवार को चेम्सफोर्ड में ही खेला जाएगा।

सूर्य कुमार का शॉट देख हैरान रह गए सचिन तेंदुलकर, रिएक्शन का वीडियो वायरल

– सूर्य कुमार ने 49 गेंदों में नाबाद 103 रन की आतिशी पारी खेली

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल-2023 के 57वें मुकाबले में शुक्रवार को मुंबई इंडियंस ने गुजरात टाइटंस पर 27 रनों से शानदार जीत दर्ज की। इस मुकाबले में मुंबई ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सूर्यकुमार यादव की तूफानी शतकीय पारी के बदौलत 219 रनों का लक्ष्य रखा, जिसके जवाब में गुजरात 20 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 191 रन ही बना पाई। इस मुकाबले में मुंबई की जीत से सबसे बड़े नायक सूर्यकुमार यादव रहे, जिन्होंने 49 गेंदों में 11 चौके और 6 छक्कों की मदद से नाबाद 103 रनों की पारी खेली। सूर्यकुमार यादव की बल्लेबाजी के दौरान उनके बल्ले से कई अविश्वसनीय शॉट्स निकले। वहीं अपनी इस पारी में उन्होंने एक ऐसा शॉट भी खेला, जिसे देख क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर भी हैरान रह गए।

सूर्यकुमार ने पारी की आखिरी ओवर की आखिरी गेंद पर अपना शतक पूरा किया और यह उनका आईपीएल का पहला शतक भी था। अपनी इस पारी के दौरान सूर्यकुमार यादव ने गुजरात के अनुभवी गेंदबाज मोहम्मद शमी को एक अविश्वसनीय छक्का जड़ा, जिसे देख मुंबई के मेंटर सचिन तेंदुलकर हैरान रह गए। सचिन के सूर्यकुमार के इस शॉट पर दिए गए रिएक्शन का वीडियो इंटरनेट पर खूब वायरल हो रहा है। वीडियो में देखा जा सकता है कि तेंदुलकर सूर्यकुमार के इस शॉट को देख हैरान रह गए और वह इशारा करते हुए बता रहे थे कि कैसे सूर्यकुमार ने शॉट

खेला और कैसे गेंद हवा में उड़ती चली गई।

सूर्यकुमार यादव की 49 गेंद में नाबाद 103 रन की आतिशी पारी के बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर मुंबई इंडियंस ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) टी20 मैच में शुक्रवार को यहां गुजरात टाइटंस को 27 रन से शिकस्त दी। मुंबई ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पांच विकेट पर 218 रन बनाने के बाद गुजरात की पारी को आठ विकेट पर 191 रन पर रोक दिया। इस जीत के बाद मुंबई की टीम 12 मैच में सात जीत से 14 अंकों के साथ तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंच गयी। गुजरात की टीम इतने ही मैच में 16 अंक के साथ शीर्ष पर है। गुजरात के लिए राशिद खान का हरफनमौला खेल जीत दिलाने के लिए काफी साबित नहीं हुआ। उन्होंने चार ओवर में 30 रन देकर चार विकेट लेने के बाद 32 गेंद में 10 छक्के और तीन चौके की मदद से नाबाद 79 रन की ताबड़तोड़ पारी खेली। राशिद ने नौवें विकेट के लिए जोसेफ (12 गेंद में सात रन) के साथ 40 गेंद में 88 रन की अटूट साझेदारी की। उनके अलावा डेविड मिलर (26 गेंद में 41) और विजय शंकर (14 गेंद में 29 रन) ही बल्ले से कुछ योगदान दे सके।

जोकोविच की इटालियन ओपन में संघर्षपूर्ण जीत

रोम । फ्रेंच ओपन की तैयारियों में जुटे नोवाक जोकोविच ने विश्व में 61वीं रैंकिंग के टॉमस मार्टिन एच्चेवेरी के खिलाफ संघर्ष पूर्ण जीत दर्ज कर इटालियन ओपन टेनिस टूर्नामेंट के अगले दौर में प्रवेश किया। इस क्ले कोर्ट टूर्नामेंट में सातवां खिताब जीतने की कवायद में लगे जोकोविच ने एच्चेवेरी को हराया। जोकोविच दाहिनी कोहनी में चोट के कारण तीन सप्ताह बाद कोर्ट पर वापसी कर रहे हैं। जोकोविच का अगला मुकाबला ग्रिगोर दिमित्रोव से होगा, जिन्होंने स्टेन वावरिंका को हराया। पुरुष वर्ग के अन्य मैचों में स्थानीय खिलाड़ी यानिक सिनर ने थानासी कोकिनाकिस को 6-1, 6-4 से, ऑस्ट्रेलियाई क्वालीफायर अलेक्सी पोपिरिन ने फेलिक्स ऑगर अलियासिम को 6-4, 4-6, 7-5 से, इटली के फैबियो फोगनिनी ने मिओमिर केकमानोविकच को 6-3, 7-6 (6) से और सातवीं वरीयता प्राप्त होल्गर रून ने आर्थर फिल्स को 6-3, 6-3 से हराया। महिलाओं के वर्ग में शीर्ष वरीयता प्राप्त इगा स्वियातेक ने अनास्तासिया पाव्लुचेनकोवा को 6-0, 6-0 से हराकर रोम में अपना तीसरा खिताब जीतने की तरफ मजबूत कदम बढ़ाए। अन्य मैचों में पाउला बडोसा ने पिछले साल की उपविजेता ओन्स जैबूर को 6-1, 6-4 से, नौवीं वरीयता प्राप्त मारिया सकारी ने बारबोरा स्ट्राइकोवा को 6-1, 6-3 से और करोलिना मुचोवा ने 18 वीं वरीयता प्राप्त मार्टिना ट्रेविसन को 3-6, 6-3, 7-5 से हराया।

दीक्षा गोल्फ टूर्नामेंट के कट में जगह बनाने वाली अकेली भारतीय

एवियन ले बैंस । भारत की केवल एक खिलाड़ी दीक्षा डागर ही जबरा ओपन गोल्फ टूर्नामेंट के कट में जगह बनाने में सफल रही। अदिति अशोक के बाद लेडीज यूरोपीय टूर में खिताब जीतने वाली दूसरी भारतीय दीक्षा ने दूसरे दौर में तीन ओवर 74 का कार्ड खेला और वह अब तीन ओवर 145 के कुल स्कोर के साथ संयुक्त 30वें स्थान पर हैं। दीक्षा ने पहले दिन इवन पार 71 का स्कोर बनाया था।

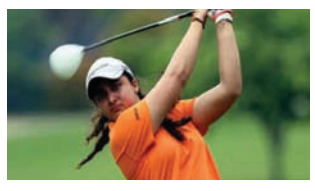

भारत की अन्य खिलाड़ियों का प्रदर्शन हालांकि अच्छा नहीं रहा और उन्हें दूसरे दौर से ही बाहर होना पड़ा। सहर अटवाल (75-74) एक शॉट से कट से चूक गईं, जबकि त्वेसा मलिक (76-75), अमनदीप द्राल (72-79) और वाणी कपूर (76-76) का प्रदर्शन निराशाजनक रहा।

देश में पहली बार होगी हैंडबॉल लीग

जयपुर । भारत में अब अन्य खेलों की तरह ही हैंडबॉल लीग भी होगी। देश में प्रीमियर हैंडबॉल लीग का पहला सत्र इसी साल आठ से 25 जून तक यहां के सवाई मानसिंह इंडोर स्टेडियम में खेला जाएगा। इस लीग में भाग लेने वाली छह टीमें राजस्थान पैट्रियट्स, गर्वित गुजरात, महाराष्ट्र आइरनमैन, गोल्डन ईगल्स उत्तरप्रदेश, तेलुगू टेलंस और दिल्ली पैंजर्स हैं। वहीं राजस्थान प्रदेश खेल परिषद की अध्यक्ष कृष्णा पूनिया ने कहा,'' हम प्रदेश में बड़ा खेल आयोजन करना चाहते थे और यह सबसे अच्छा अवसर है। इससे देश में हैंडबॉल की प्रतिभाओं को बढ़ावा मिलने के साथ ही खिलाड़ियों को अपना कौशल दिखाने का भी अवसर मिलेगा।''

बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव ने बताया शतक लगाने का राज

नयी दिल्ली (एजेंसी)। धुंआधार बल्लेबाज शिवकुमार यादव ने अपने शतक लगाने का राज जाहिर किया है। गौरतलब है कि शुक्रवार को आईपीएल 2023 के 57वें मुकाबले में सूर्यकुमार यादव के बल्ले ने खूब आग उगली। गुजरात टाइटंस के खिलाफ मैच में सूर्यकुमार यादव ने 49 गेंदों में 11 चौके और 6 छक्कों की मदद से नाबाद 103 रनों की शतकीय पारी खेली। सूर्यकुमार का यह आईपीएल का पहला शतक था और उनके इस शतक की बदौलत मुंबई ने 27 रनों से गुजरात पर बड़ी जीत दर्ज की। सूर्यकुमार को इस मैच जिताऊ पारी के चलते मैन ऑफ द मैच पुरस्कार से नवाजा गया। इस मौके पर सूर्युकुमार यादव ने कहा कि वह बल्लेबाजी में काफी अभ्यास करते हैं और उन्होंने कहा कि वह सीधे आकर हिट करने की नहीं सोचते, बल्कि उन्हें पता होता है कि वह कौनसे शॉट खेलना चाहते हैं। सूर्यकुमार ने कहा ?कि ऐसा कह सकते हैं कि यह मेरी सर्वश्रेष्ठ टी20 पारियों में से एक थी। मैं जब भी रन बनाता हूं तो मुझे यह लगता है कि टीम को जरूर जीतना चाहिए। इस मैच की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि टीम ने आज पहले बल्लेबाजी की और कहेंगे कि अगर आप 200-220 रनों का पीछा कर रहें हैं तो इसी गति से रन बनाएंगे। मैदान पर काफी ओस थी और 7-8वें ओवर से ही ओस आ गई थी।

शिवकुमार ने आगे कहा कि मुझे अपनी पारी के दौरान पता था कि कौन से शॉट्स खेलने हैं। मैं सीधे आकर हिट करने के बारे में नहीं सोच रहा था। मेरे दिमाग में दो शॉट थे- एक तो फाइन लेग पर और एक थर्ड मैन के ऊपर से। खेल से पहले काफी अभ्यास होता है, इसलिए जब मैं खेलने आता हूं तो मैं बहुत स्पष्ट होता हूं और खुद को पूरी तरह व्यक्त करता हूं। सूर्यकुमार यादव की 49 गेंद में नाबाद 103 रन की आतिशी पारी के बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर मुंबई इंडियंस ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में गुजरात टाइटंस को 27 रन से शिकस्त दी। मुंबई ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पांच विकेट पर 218 रन बनाने के बाद गुजरात की पारी को आठ विकेट पर 191 रन पर रोक दिया। इस जीत के बाद मुंबई की टीम 12 मैच में सात जीत से 14 अंकों के साथ तालिका में तीसरे स्थान पर पहुंच गयी।

मदर्स डे पर विशेष

अपने बच्चों को हमेशा पलकों की छांव में रखने वाली मां आज भी यही चाहती है कि उसके बच्चों पर किसी बुरे व्यक्ति का साया न पड़े। उसे अपने आंचल में छुपा कर रखती है। बच्चों को अच्छे-बुरे का पहला ज्ञान तो वही देती है।

घर की पाठशाला की पहली गुरु

मां को गुरु दर्जा यों ही नहीं मिला। बच्चों को अनुशासन का पहला पाठ वही तो पढ़ाती है। नवजात के जन्म से लेकर नर्सरी में जाने तक मां वस्तुतः एक आदर्श पुरुष या नारी को ही तैयार कर रही होती है। अक्षर ज्ञान से लेकर रंगों का ज्ञान, प्रकृति से रूबरू कराने से लेकर अपने आसपास के बारे में इस तरह बताती-सिखाती चलती है कि बच्चा जब घुटनों के बल खड़ा होता है या दौड़ता है तो वह अपनी मां की नसीहतों को अवचेतन में रखता है। नसीहत देने की आदत मांओं की पुरानी आदत रही है। अब इसमें भी बदलाव आया है। हालांकि बेटियां आज भी अपनी मां से सलाह लिए बिना कभी कोई कदम नहीं उठाती। मगर बेटे अब बदल रहे हैं।

बच्चों की आकांक्षाओं को

उड़ान देती सुपर मॉम

बदल रही है मां की भूमिका

बच्चों को अपने आंचल से बांधे रखने का दौर अब खत्म हो चुका है। ज्यादातर आधुनिक मांएं इस बात को समझ चुकी हैं कि नसीहत देने से अच्छा है कि बच्चों की वे मार्गदर्शक बनें। वे अपने बेटे-बेटियों को ज्ञान के पंख देकर उन्हें उड़ान भरने देना चाहती हैं। कामकाजी ही नहीं, घरेलू महिलाएं भी बच्चों के कॅरियर की चिंता करती हैं। बच्चे पांचवी क्लास पार करते हैं तो उन्हें मांएं कुछ बनने की प्रेरणा देना शुरू कर देती हैं।

माताओं में बढ़ता आत्मविश्वास

कम पढ़ी-लिखी मांओ में भी इन दिनों गजब का आत्मविश्वास देखा जा सकता है। वे हर हाल में बच्चों को पढ़ाना चाहती हैं। खुद नहीं पढ़ा सकतीं तो ट्यूटर रख लेती हैं। कभी-कभार स्कूल जाकर बच्चे की प्रगति रिपोर्ट भी ले लेती हैं। परवरिश में कोई कसर नहीं छोड़ती। पिता बेशक सुबह बिस्तर पर सोया रहे। मगर यह मां ही है, जो बच्चे को उठाकर स्कूल के लिए तैयार करती हैं। उनका बस्ता ठीक करने से लेकर लंच बाक्स तक तैयार करती हैं। यहीं नहीं उन्हें स्कूल वैन तक में बैठाती हैं। कुछ मांएं तो स्कूल तक छोड़ने जाती हैं। चाहे वे रिक्शे पर ले जाएं या फिर अपनी कार में। बच्चों की बेहतर परवरिश के लिए कई मांओ ने अपने कॅरियर तक की परवाह नहीं की। ऐसी कई मिसाल हैं जिनमें महिलाओं ने बच्चों का भविष्य बनाने के लिए अपने भविष्य को दांव पर लगा दिया।

भारतीय माताएं सबसे सजग

दुनिया भर में भारतीय मांएं सबसे सजग हैं। उनमें लगातार बदलाव आ रहा है। अगर कोई महिला कामकाजी नहीं भी है तो भी वह अपने बच्चों के भविष्य के लिए उतनी ही चिंतित हैं। वह उतनी ही व्यस्त हैं जितनी कोई कामकाजी महिला। अगर वह थोड़ी भी पढ़ी लिखी है तो वह अखबारों से न्यूज चैनलों से ज्ञान हासिल कर रही है। यहां तक कि वह इंटरनेट खंगाल कर भी बच्चों के बारे में नई जानकारी हासिल करने के साथ उन्हें नवीनतम सूचनाएं दे रही हैं। वह अब दूसरों से राय नहीं लेतीं, वह सूचना तंत्र से अपनी राय खुद बना रही हैं।

अब दीन-हीन नहीं है मां

एक जमाना था कि पिता ही बच्चों के भविष्य का निर्णय करते थे। अनुशासन का डंडा उन्हीं का चलता था। पिता डाक्टर हो तो वह बच्चों को भी अपने जैसा बनाने की जिद पाल लेता था। और मांएं दरवाजे पर खड़ी सिर पर आंचल डाले चुपचाप सुनती रहती थीं। लेकिन अब ऐसा नहीं है। वह हस्तक्षेप करती हैं, क्योंकि वह बच्चों की क्षमता के बारे में अपने पति से ज्यादा जानती हैं। आखिर नर्सरी से लेकर हायर सेकेंडरी तक बच्चों को तैयार करने में उसकी भी कुछ भूमिका रही है। स्कूल की डायरी पढ़ने से लेकर वह होमवर्क भी तो कराती रही हैं। वह दीन-हीन कैसे हो सकती हैं? उसकी बात भी क्यों नहीं सुनी जानी चाहिए। फिल्म तारे जमीन पर में वह बच्चा मुसीबत में आखिर मां को ही पुकारता है क्योंकि पिता उसकी दित तो समझता नहीं।

सहेली भी दोस्त भी

बच्चों के साथ मां का इतना गहरा रिश्ता होता है कि वह उनके बड़े होने पर बेटी की सहेली या बेटे की दोस्त जैसी हो जाती है। बेटे बताएं या न बताएं मगर बेटियां हर बात मां को बताती हैं क्योंकि उनके जीवन में कोई विश्वसनीय है तो सिर्फ वही। यह एक ऐसा भावनात्मक रिश्ता है जो सिर्फ मां से ही बन पाता है। भारतीय समाज के हर वर्ग में इस रिश्ते की सुगंध को आप महसूस कर सकते हैं। रिश्ते में परम्परा का बोध आज भी है मगर जीवन में आधुनिकता आने के साथ मांएं बच्चों को आंचल में छुपाए रखने की बजाय इस छांव से बाहर निकाल कर जीवन की दौड़ में आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही हैं। इसलिए क्योंकि वह जानती हैं बेटा एक कदम भी बढ़ाएगा तो वह उसके पीछे खड़ी है। अगर गलत दिशा में गया तो भी वह उसे रोक लेगी क्योंकि वह एक सुपर मॉम है।

रिश्ते तो बहुत हैं मां सिर्फ एक है

मां की ममता को किसी परिभाषा में बांधना मुश्किल है। श्रीमती विमलेश श्रीवास्तव कहती है- दुनिया में आने के बाद बच्चा सबसे पहले मां को ही पहचानता है और उसके मुंह से निकलने वाला पहला शब्द मां ही होता है।

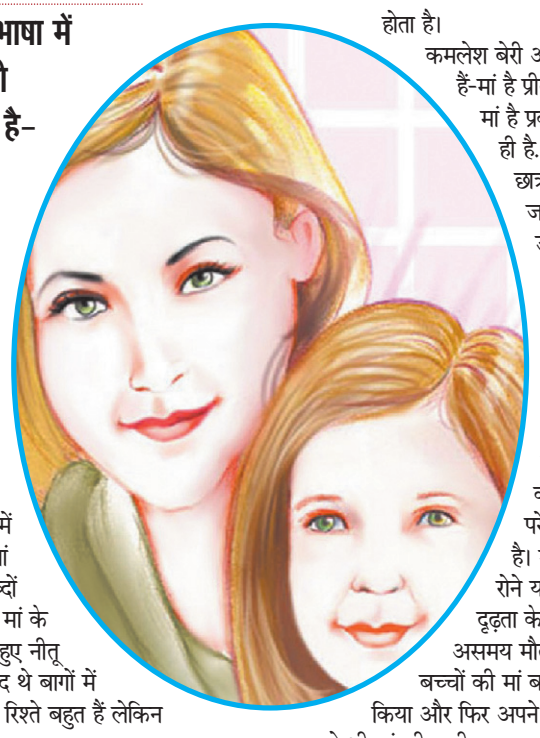

मदर्स डे पर बच्चों की भावनाएं चरम पर होती है। कोई मां के साथ अपने रिश्ते को खूबसूरत कविता के रूप में बयान करता है तो किसी के लिए मां के प्रति प्यार के इजहार के लिए शब्दों की सीमा नाकाफी होती है। अपनी मां के परिश्रम और लगन की गाथा बताते हुए नीतू अग्रवाल भावुक हो उठी। उनके शब्द थे बागों में फूल बहुत हैं लेकिन गुलाब एक है, रिश्ते बहुत हैं लेकिन मां सिर्फ एक है।

प्रेमलता सरीन (योग प्रशिक्षिका) के अनुसार धरती की तरह मां भी अपने जीवन में बच्चों का सुरक्षा कवच बनती है। मां की ममता को किसी परिभाषा में बांधना मुश्किल है। श्रीमती विमलेश श्रीवास्तव कहती है-दुनिया में आने के बाद बच्चा सबसे पहले मां को ही पहचानता है और उसके मुंह से निकलने वाला पहला शब्द मां ही होता है।

कमलेश बेरी अपनी अनुभूति कविताओं में व्यक्त करते हैं-मां है प्रीत, मां है मीत, नेह का सागर मां ही है, मां है प्रकाश, मां है आकाश, जीवन की भोर मां ही है...। कार्मल कान्वेंट स्कूल की नन्ही छात्रा प्रज्ञा मालवीय ने कहा,भगवान हर जगह हमारे साथ नहीं रह सकते इसलिए उन्होंने मांह के रूप में अपनी सबसे प्यारी छवि को हमारे पास भेजा है। ज्योति जोशी भावुक शब्दों में कहती है, मुझे अपनी मां का साथ जिंदगी की कड़ी धूप में शीतल छाया की तरह लगता है। मेरी हर समस्या का इलाज मेरी मां के पास है चाहे अचार डालना हो या कोई पकवान बनाना हो या फिर कोई भी व्यक्तिगत उलझन,मेरी हर परेशानी मां के पास जाकर खत्म हो जाती है। मेरी मां कहती है कि जो भी स्थिति आए रोने या कमजोर होने के बजाए उसका सामना दृढ़ता के साथ करो। आशा साहू बताती है, मैंने असमय मौत का शिकार हुई अपनी जेठानी के बच्चों की मां बनकर सर्वप्रथम मातृत्व को महसूस किया और फिर अपने बच्चों के साथ ही जेठानी के बच्चों को भी मां की कमी महसूस नहीं होने दी। आज मुझे बच्चों व नाती-पोतों के भरे-पूरे परिवार की सदस्य के रूप में गर्व का अहसास होता है। संध्या रामकृष्ण बायवार के शब्द कविता में कुछ यूं ढले- मां की महिमा क्या गाऊं, मां की कहानी क्या सुनाऊं, हे मां तू है महान, तूने हमको जन्म दिया, मिले हर जन्म में तेरी को,मां तुझे सलाम।

अपनी मां के परिश्रम और लगन की गाथा बताते हुए नीतू अग्रवाल भावुक हो उठीं। उनके शब्द थे बागों में फूल बहुत हैं लेकिन गुलाब एक है, रिश्ते बहुत हैं लेकिन मां सिर्फ एक है।